आओ हिंदी सीखें – 7

(द्वितीय भाषा)

(सातवीं कक्षा के लिए)

सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षा और भलाई विभाग, पंजाब का सांझा प्रयास

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण : 2019-20.....1,99,000..... प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल
चित्रकार : गुरदीप सिंह 'दीप'

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षा और भलाई विभाग, पंजाब का सांझा प्रयास

यह पुस्तक बिक्री के लिये नहीं है।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं **मैसः मनूजा प्रिंटपैक प्रा. लिमि., जालन्धर** द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केंद्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (द्वितीय भाषा) की पाठ्य-पुस्तकों के नवीकरण की योजना प्रवेश वर्ष 2007 से बनाई हुई है। छठी श्रेणी तक पाठ्य-पुस्तकें नवीन दृष्टिकोण के आधार पर तैयार करके लागू की जा चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक-7 में पाठों का चयन बच्चों के बौद्धिक और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक पाठ किसी न किसी मानवीय मूल्य को विकसित करता है। पाठों के विस्तृत अभ्यास बच्चों की कल्पना-शीलता और सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करने में सहायक हैं। भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना अधूरा है। इस पुस्तक में व्याकरण के मूल नियमों को अत्यन्त सरल एवं सहज उदाहरणों के द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है। पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार गुरदीप सिंह 'दीप' ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में हिंदी भाषा का ज्ञान देने में सहायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आये सभी सुझाव बोर्ड द्वारा आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय – सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	भारत के कोने-कोने से	डॉ॰ हरिवंशराय बच्चन	1–4
2.	परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है	संकलित	5–11
3.	रक्तदान-एक बहुमूल्य संस्कार	महेश कुमार शर्मा	12–17
4.	फूल और काँटा	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	18–20
5.	हार की जीत	सुदर्शन	21–27
6.	राष्ट्र के गौरव प्रतीक	सुधा जैन 'सुदीप'	28–34
7.	आ री बरखा	डॉ॰ राकेश कुमार बब्बर	35–38
8.	विजय दिवस	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	39–44
9.	स्वराज्य की नींव	शिव शंकर	45–51
10.	बढ़े चलो, बढ़े चलो	सोहन लाल द्विवेदी	52–54
11.	धीरा की होशियारी	'कुछ और कहानियाँ' में से	55–59
12.	अशोक का शस्त्र-त्याग	संकलित	60–66
13.	साक्षरता अभियान	डॉ॰ कमलेश बंसल	67–70
14.	गिल्लू	महादेवी वर्मा	71–77
15.	धर्मशाला	डॉ॰ मीनाक्षी वर्मा	78–82
16.	कोई नहीं बेगाना	डॉ॰ योगेन्द्र बख्शी	83–87
17.	अन्याय के विरोध में	एंतन चेखव	88–92
18.	सड़क सुरक्षा-जीवन रक्षा	डॉ॰ सुनील बहल	93–100
19.	दोहावली	संत कबीर	101–102
20.	मैं जीती	'कुछ और कहानियाँ' में से	103–108

पाठ-1

भारत के कोने-कोने से

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

हम गिरि की ऊँचाई लाए,
हम सागर की गहराई,
हम पूरब से आए, लाए
प्रातः किरण की अरुणाई।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

हम पश्चिम से आए, लाए
आग-राग राजस्थानी
हम लाए हैं गंग-जमुन के
संगम का निर्मल पानी।

भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

कल आने वाली दुनिया में
हम कुछ कर दिखलाएँगे,
भारत के ऊँचे माथे को
ऊँचा और उठाएँगे।
भारत के कोने-कोने से हम सब बच्चे आए हैं।
नई उमंगों-आशाओं का हम संदेशा लाए हैं॥

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਭਾਰਤ	=	भारत	ਪਾਣੀ	=	पानी
ਬੱਚੇ	=	बच्चे	ਗੰਗਾ	=	गंगा
ਸੰਦੇਸ਼ਾ	=	संदेशा	ਪੂਰਬ	=	पूरब
ਦੁਨੀਆ	=	दुनिया	ਕਿਰਨ	=	किरण

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਸਮੁੰਦਰ	=	सागर	ਲਾਲੀ	=	अरुणाई
ਸਾਫ਼	=	निर्मल	ਅੱਗ	=	आग
ਸਵੇਰਾ	=	प्रात:	ਆਸ	=	आशा
ਪਰਬਤ	=	गिरि	ਮੇਲ	=	संगम

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) गीत गाने वाले बच्चे कहाँ से आये हैं ?
(ख) 'भारत के कोने-कोने से' कविता में बच्चे क्या संदेश लेकर आये हैं ?
(ग) कविता में 'गिरि' और 'सागर' का क्या अर्थ है ?
(घ) बच्चे अपने देश के लिए क्या करना चाहते हैं ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) 'नई उमंगों-आशाओं' से कवि का क्या भाव है ?
(ख) 'कल आने वाली दुनिया में
हम कुछ कर दिखलायेंगे,
भारत के ऊँचे माथे को
ऊँचा और उठायेंगे।'
इन काव्य-पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या करें।

5. भाववाचक संज्ञा बनायें :-

ऊँचा = ऊँचाई

गहरा = _____

अरुण = _____

6. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद करें :-

भारत : भ् + आ + र् + अ + त् + अ

गिरि : -- + -- + -- + --

राजस्थानी : -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- + -- + --

दुनिया : -- + -- + -- + -- + -- + --

संदेशा : -- + -- + -- + -- + -- + -- +

निर्मल : -- + -- + -- + -- + -- + -- + --

7. समान अर्थ वाले शब्द लिखें :-

गिरि	=	पर्वत	माथा	=	_____
सागर	=	_____	किरण	=	_____
संदेशा	=	_____	पानी	=	_____
पूरब	=	_____	प्रात:	=	_____
दुनिया	=	_____			

8. बहुवचन रूप लिखें :-

आशा	=	_____	ऊँचा	=	_____
उमंग	=	_____	कोना	=	_____
संदेश	=	_____	बच्चा	=	_____

9. नीचे दी गई पंक्तियों को पूरा करें :-

(1) हम गिरि की _____

(2) हम सागर की _____

(3) हम पश्चिम से आए, लाए

_____

(4) हम लाए हैं गंग-जमुन के

_____

10. पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण क्षेत्रों में स्थित दो-दो राज्यों के नाम लिखें :-

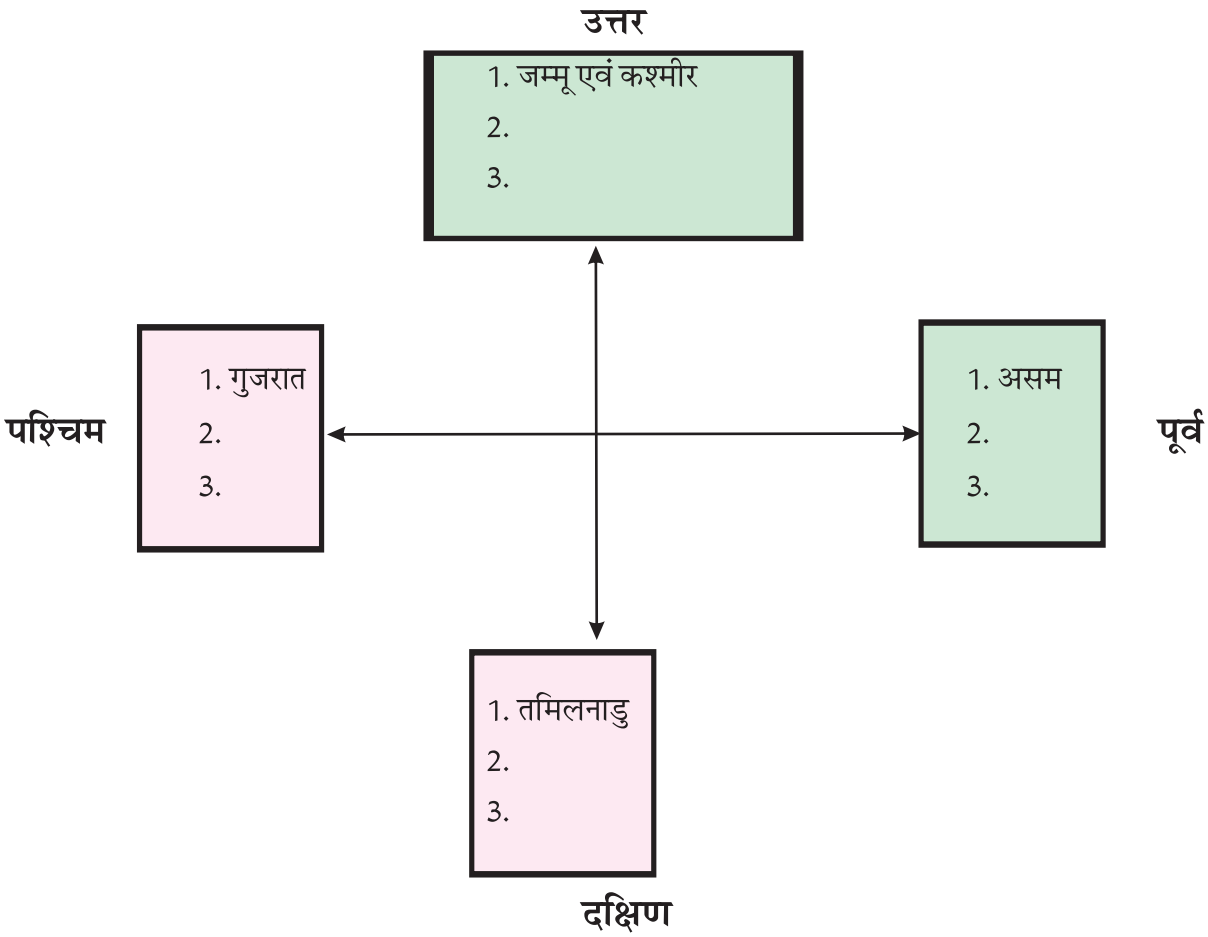

पाठ 2

परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है

किसी समय किसी देश में शूरसेन नामक राजा हुआ करता था। वह अपनी संतान के समान प्रजा का पालन करता था। सुमति नामक उसके मंत्री का परमात्मा पर अटूट विश्वास था। 'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है' वह ऐसा मानता भी था और इस पर अमल भी करता था। कोई भी बुरी घटना उसको डाँवाडोल नहीं कर सकती थी।

एक बार संयोग से राजा की उँगली पर फोड़ा निकल आया। पीड़ा से बेचैन होकर उसने मंत्री को बुला भेजा। मंत्री ने दर्द से बेहाल राजा को भी 'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है' यही शब्द कहे। राजा सोचने लगा —यह मंत्री कितना पत्थर-दिल है। इस हालत में भी मुझ पर दया नहीं करता।

कुछ समय बाद रोग के बढ़ जाने पर राजा की उँगली गल गई। उसकी उँगली का गला भाग काटना पड़ा। वह अपने जीवन के बारे में निराश हो गया। उसने फिर मंत्री को बुला भेजा। मंत्री ने इस बार भी वही पुराना विश्वास दोहराया। क्रोध से जलभुन कर राजा ने सोचा- 'अरे यह दुष्ट मंत्री बहुत ही कृतघ्न है। स्वस्थ हो जाने पर मैं अवश्य ही इसको मौत के घाट उतार दूँगा।'

आखिर राजा रोगहीन हो गया और पहले की तरह राज्य का काम-काज करने लगा। एक दिन उसकी शिकार खेलने की इच्छा हुई जिसके प्रबंध के लिए उसने मंत्री को कहा। मंत्री ने भी स्वामी की आज्ञा अनुसार सभी प्रबंध कर दिये।

राजा घोड़े पर सवार होकर मंत्री और बहुत से सेवकों को साथ लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा। जब वह घने जंगल में पहुँच गया तो उसने सेवकों को वहीं ठहर जाने का आदेश दिया और मंत्री को साथ लेकर भयानक जंगल के बीचों-बीच चल पड़ा। घूमते-घूमते जब वे एक कुएँ के पास से गुज़रे, राजा अपने मन में विचार करने लगा ----- इससे अच्छा मौका कहाँ मिलेगा? प्यास का बहाना बनाकर इसे कुएँ से जल लाने की आज्ञा देता हूँ और ज्यों ही यह जल निकालने के लिए नीचे की ओर झुकेगा, मैं इसे कुएँ में गिरा दूँगा।

राजा ने जैसा सोचा था वैसा ही कर दिखाया। मंत्री ने गिरते-गिरते भी वही पुराने शब्द दोहराए-'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।'

इतने में सूर्य देवता अपनी किरणें समेट कर अस्त हो गए। राजा को जंगल से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सूझ रहा था। जंगली जानवर चारों ओर घूमने शुरू हो गए थे। आखिर थका-हारा राजा, डर का मारा, एक वृक्ष पर चढ़ कर जा छिपा। उसने घोड़े को पहले ही वृक्ष के नीचे बाँध दिया था।

अब रात काफी घनी हो चुकी थी। इतने में किसी दूसरे राजा के सैनिकों का एक बहुत बड़ा दल उस भयानक जंगल में घुस आया। घोड़े को वृक्ष के साथ बँधा देखकर उनको विश्वास हो

गया कि इसका सवार भी अवश्य ही आस-पास छिपा बैठा होगा। वे लोग मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे कि यदि कोई मनुष्य उनके हाथ लग जाएगा तो वे उसे प्रात:काल राजा के पास ले जायेंगे। राजा चामुण्डा देवी को उसकी बलि चढ़ा कर अपना संकल्प पूरा कर लेगा और उनके कर्त्तव्य का पालन भी हो जाएगा।

पलभर में उनमें से एक सैनिक वृक्ष पर जा चढ़ा और राजा को बाँध कर नीचे उतार लाया। राजा को घोड़े पर बिठा कर वे सभी लोग विजय के गीत गाते हुए अपने देश की ओर चल पड़े और हाथ लगे शिकार को अपने स्वामी की सेवा में हाज़िर कर दिया।

अब बलि देने की तैयारियाँ शुरू हो गईं। अभी जल्लाद ने तलवार उठाई ही थी कि राजा की नज़र बलि-जीव के कटे हुए अंग पर जा टिकी। राजा हैरान होकर चिल्ला उठा — अरे पापियो ! यह क्या कर डाला? तुम नहीं जानते कि अंगहीन मनुष्य की बलि नहीं दी जाती। तो हटाइए इसे यहाँ से।' फिर क्या था। राजा शूरसेन अपने प्राणों की खैर मनाता हुआ वहाँ से तत्काल निकल भागा।

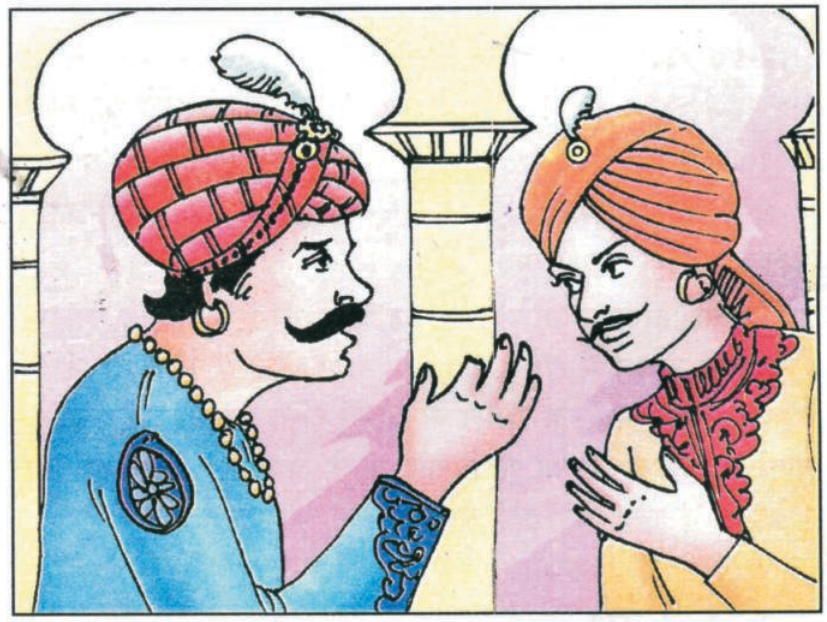

राजधानी लौटते हुए मार्ग में राजा के विचारों ने पलटा खाया। सोचने लगा कि मंत्री के इस विश्वास को कि 'परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है,' मैंने भली-भाँति परख लिया है। अंगहीन होने के कारण ही मेरी जान बची है। अब मैं शीघ्र ही अपने नेकदिल मंत्री के पास जाता हूँ। नाहक उसकी हत्या करके मैंने घोर अपराध किया है। क्या वह अब भी जीवित है? चलकर देखता हूँ।

कुएँ के पास पहुँच कर वह ज़ोर से पुकारने लगा। हे धर्मात्मा बंधुवर! क्या तुम अब भी ज़िंदा हो? राजा के वचन सुनकर मंत्री ने उत्तर दिया-'राजन् ! मैं कुएँ में मृत्यु-तुल्य जीवन बिता रहा हूँ। इच्छा हो तो मुझे निकालिए।'

राजा ने मंत्री को कुएँ से बाहर निकाला। बार-बार अपना दोष स्वीकार करते हुए उससे क्षमा माँगी। मंत्री ने कहा, महाराज! परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। मेरा कुँए में गिरना भी एक शुभ लक्षण था। अंगहीन होने के कारण आप तो बच जाते परंतु मुझ भले-अच्छे मनुष्य का मौत से छुटकारा पाना संभव न होता।' इसलिए मानना पड़ता है कि यह सब कुछ परमात्मा ने भलाई के लिए ही किया है।

अन्त में प्रसन्नतापूर्वक दोनों राजधानी लौट आये।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਸ਼ੂਰਸੇਨ	=	शूरसेन	ਵਿਸ਼ਵਾਸ	=	विश्वास
ਸੰਤਾਨ	=	संतान	ਘਟਨਾ	=	घटना
ਪਰਮਾਤਮਾ	=	परमात्मा	ਆਗਿਆ	=	आज्ञा
ਪੱਥਰ	=	पत्थर	ਮੰਤਰੀ	=	मंत्री
ਜਲਾਦ	=	जल्लाद	ਅੰਗਹੀਣ	=	अंगहीन

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਨਿਰੋਗ	=	रोगहीन	ਦਰੱਖ਼ਤ	=	वृक्ष
ਕ੍ਰਿਤਘਣ	=	कृतघ्न	ਬਲੀ ਦਾ ਬਕਰਾ	=	बलि-जीव
ਐਂਵੇਂ	=	नाहक	ਮੌਤ ਬਰਾਬਰ	=	मृत्यु-तुल्य
ਖੂਹ	=	कुआँ	ਭਰਾ ਵਰਗਾ	=	बंधुवर
ਛੁਪਣਾ	=	अस्त	ਖਿਮਾ	=	क्षमा

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) सुमति कौन था?

(ख) सुमति किस बात पर विश्वास करता था?

(ग) राजा शूरसेन शिकार खेलने कहाँ गया?

(घ) राजा ने मंत्री से बदला लेने का क्या उपाय सोचा?

(ङ) राजा ने अपने घोड़े का कहाँ बाँधा?

(च) घोड़े को वृक्ष के साथ बँधा देखकर सैनिकों ने क्या सोचा?

(छ) सैनिक राजा शूरसेन को क्यों पकड़ना चाहते थे?

(ज) राजा के प्राण कैसे बचे?

(झ) राजा ने मंत्री को कुँए से कब निकाला?

(ञ) राजा ने किससे क्षमा माँगी और क्यों?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) राजा अपने जीवन से निराश क्यों हो गया था?

(ख) कुँए के पास से गुज़रते हुए राजा ने क्या सोचा?

(ग) राजा की बलि क्यों नहीं दी जा सकती थी?

(घ) 'मुझ भले-अच्छे मनुष्य का मौत से छुटकारा पाना संभव न होता' मंत्री के इस कथन को स्पष्ट करें।

(ङ) इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

5. कहानी में घटी घटनाओं के क्रम बॉक्स में अंकों में लिखो :-

☐ बार-बार अपना दोष स्वीकार करते हुए राजा ने मंत्री से क्षमा माँगी।

☐ राजा की उँगली पर फोड़ा निकल आया।

1. राजा मंत्री और बहुत-से सेवकों को साथ लेकर जंगल की ओर निकल पड़ा।

☐ मंत्री ने दर्द से बेहाल राजा को कहा कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।

☐ राजा ने मंत्री को कुँए से बाहर निकाला।

☐ दूसरे राजा के सैनिकों ने राजा को पकड़ लिया और अपने स्वामी की सेवा में हाज़िर कर दिया।

☐ राजा ने अपने मंत्री को कुँए में धक्का दे दिया।

☐ दूसरे राजा ने अंगहीन होने के कारण राजा की बलि देने से इंकार कर दिया।

☐ राजा को जंगल से बाहर निकलने का मार्ग नहीं सूझ रहा था।

☐ राजा शूरसेन अपने प्राणों की खैर मनाता हुआ वहाँ से तत्काल निकल भागा।

6. किसने कहा, किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) अरे पापियो! यह क्या कर डाला?	_____	_____
तुम नहीं जानते कि अंगहीन मनुष्य की बलि नहीं दी जाती।	_____	_____
(ख) परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है।	_____	_____
(ग) हे धर्मात्मा बंधुवर ! क्या तुम अब भी ज़िंदा हो?		
(घ) मेरा कुँए में गिरना भी एक शुभ लक्षण था।	_____	_____

7. इन शब्दों और मुहावरों के अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

पत्थर दिल _____ _____

रोगहीन _____ _____

थका-हारा _____ _____

नेकदिल _____ _____

शुभ लक्षण _____ _____

मौत के घाट उतारना _____ _____

संकल्प पूरा करना _____ _____

प्राणों की खैर मनाना _____ _____

मृत्यु-तुल्य जीवन बिताना _____ _____

जल भुनना _____ _____

8. इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें :-

जीवित = **मृत**

भलाई = _____

अस्त = _____

प्रात:काल = _____

कृतघ्न = _____

शुभ = _____

रोगहीन = _____

दोष = _____

स्वामी = _____

इच्छा = _____

9. इन शब्दों के दो-दो समानार्थक शब्द लिखें :-

राजा = **नृप, भूपति**

परमात्मा = _____,_____

घोड़ा = _____,_____

सेवक = _____,_____

रात = _____,_____

जंगल = _____,_____

वृक्ष = _____,_____

तलवार = _____,_____

10. नये शब्द बनायें :-

धर्म + आत्मा = **धर्मात्मा** भला + आई = **भलाई**

परम + आत्मा = _____ अच्छा + आई = _____

11. इन शब्दों के शुद्ध रूप लिखें :-

कृतघन = _____

चूमुण्डा = _____

पतथर = _____

डावाडोल = _____

कुआ = _____

सैनीक = _____

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. (क) (i) जल्लाद ने तलवार उठायी।

(ii) सैनिकों ने राजा को पकड़ लिया।

पहले वाक्य में जल्लाद ने क्या उठायी ? उत्तर–'तलवार'। 'तलवार' कर्म है। इसलिए यह सकर्मक क्रिया है। इसी तरह दूसरे वाक्य में सैनिकों ने किसे पकड़ लिया ? उत्तर–राजा को। 'राजा को' कर्म है। इसलिए यह भी सकर्मक क्रिया हे।

अतएव जिस क्रिया में कर्म होता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है।

(ख) (i) राजा चिल्ला रहा था।

(ii) सैनिक चल पड़े।

उपर्युक्त वाक्यों में केवल कर्त्ता (राजा, सैनिक) तथा क्रिया (चिल्ला रहा था, चल पड़े) का, प्रयोग किया गया है। यहाँ कर्म नहीं है। इसलिए यहाँ अकर्मक क्रिया है।

अतएव जिन क्रियाओं में कर्म नहीं होता, वह अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

सकर्मक एवं अकर्मक क्रिया की पहचान

सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया की पहचान करने के लिए वाक्य में आई क्रिया पर 'क्या', 'किसे' या 'किसको' लगाकर प्रश्न किया जाये। **यदि उत्तर में कोई व्यक्ति या वस्तु आए, तो क्रिया सकर्मक होगी अन्यथा क्रिया अकर्मक होगी।** जैसे :–

जल्लाद ने क्या उठायी ? उत्तर मिलता है– 'तलवार'। इसी तरह सैनिकों ने किसे पकड़ लिया ? उत्तर मिलता है– राजा को। अतएव ये सकर्मक क्रियाएँ हैं किंतु 'ख' भाग के दोनों वाक्यों में प्रश्न करें तो उत्तर नहीं मिलता। जैसे–

राजा क्या चिल्ला रहा था ? तथा सैनिक क्या चल पड़े ? यहाँ प्रश्न ही अटपटा लगता है। यहाँ 'चिल्ला रहा था' तथा 'चल पड़े' क्रियाएँ कर्म की अपेक्षा नहीं रखतीं, अत: ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

2. (क) सेवक चला गया।

(ख) सेविका चली गयी।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'क' उदाहरण में क्रिया का कर्त्ता पुल्लिंग (सेवक) है, अत: क्रिया भी पुल्लिंग (चला गया) है जबकि दूसरे वाक्य में 'ख' उदाहरण में क्रिया का कर्त्ता स्त्रीलिंग (सेविका) है अत: क्रिया भी स्त्रीलिंग (चली गयी) है।

अत: लिंग में परिवर्तन के कारण क्रिया में भी परिवर्तन हुआ।

इस प्रकार– संज्ञा शब्दों की तरह क्रिया शब्दों के भी दो लिंग होते हैं। **1. पुल्लिग 2. स्त्रीलिंग।**

3. **(क)** राजा जंगल की ओर निकल पड़ा।

(ख) वे (राजा और मंत्री) जंगल की ओर निकल पड़े।

उपर्युक्त पहले वाक्य में 'क' उदाहरण में कर्त्ता (राजा) एक वचन है, अत: क्रिया भी एक वचन (निकल पड़ा) प्रयुक्त हुई है तथा दूसरे वाक्य में कर्त्ता 'वे' बहुवचन है, अत: क्रिया भी बहुवचन (निकल पड़े) प्रयुक्त हुई है।

अत: वचन बदलने पर क्रिया का रूप भी बदल जाता है।

इस प्रकार क्रिया शब्दों के दो वचन होते हैं। **1. एकवचन 2. बहुवचन।**

- *परमात्मा पर विश्वास रखते हुए सभी काम ईमानदारी से करो।*
- *किसी को धोखा न दो।*
- *किसी का बुरा मत करो।*

पाठ-3

रक्तदान-एक बहुमूल्य संस्कार

भारत की सभ्यता एवं इतिहास इस बात का साक्षी है कि यहाँ के लोगों में दान का संस्कार प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। आज के आधुनिक एवं वैज्ञानिक युग में भी यह संस्कार काफी हद तक विद्यमान है। हमें अपने समाज में दान के संकल्प का ज्ञान किसी दरिद्र को भोजन या कुछ धन देने , धार्मिक स्थानों पर चढ़ावा चढ़ाने, धार्मिक समागमों पर पैसे या खाद्य-सामग्री आदि देने, कन्या-दान, विद्या-दान, किसी समाज-सेवी संस्था को योगदान देने आदि के रूप में दिया जाता है। इस प्रकार के दान देने वाले व्यक्ति को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस तथ्य में कोई शंका नहीं कि किसी को दान देने से मन आनंद और शांति से पुलकित हो उठता है। लेकिन किसी को जीवनदान देना ही इस संसार में सर्वोत्तम दान है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या हम किसी को जीवनदान दे सकते हैं? हाँ, निस्संदेह दे सकते हैं। आवश्यकता के समय किसी को अपना थोड़ा-सा रक्त देकर हम उसके प्राणों की रक्षा कर सकते हैं। सही मायनों में रक्तदान वह बहुमूल्य दान है, जिसके आगे सभी दान तुच्छ पड़ जाते हैं। क्योंकि इस पूरी सृष्टि में मानव ही रक्तदान द्वारा दूसरे मानव की जीवन रक्षा करने में सक्षम है।

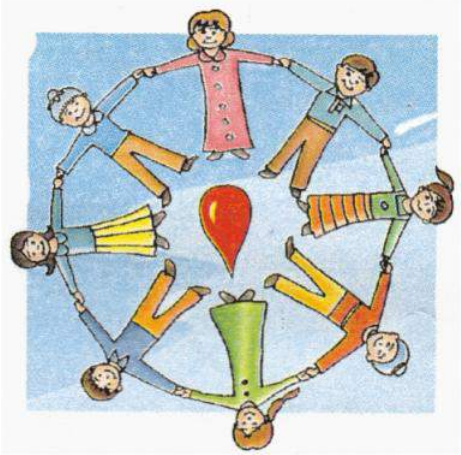

आज के आधुनिक युग ने जहाँ हमारे जीवन को अत्यंत सुखदायी व गतिशील बना दिया है वहीं प्रतिदिन दुर्घटनाएँ न जाने कितनों के प्राण हर लेती हैं और कितने ही अपनी जीवन-रक्षा के लिए अस्पतालों में साँसों से संघर्ष कर रहे होते हैं। दूसरी ओर अनभिज्ञता, प्रदूषण और गिर रहे नैतिक मूल्यों के परिणामस्वरूप एक से बढ़कर एक घातक बीमारी ने लोगों को अपनी चपेट में लेना शुरू कर दिया है। बहुत-सी बीमारियाँ जिनको हमने पहले कभी सुना भी न था, आज विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। जैसे-कैंसर, एड्स, डेंगू, ड्राप्सी, हैपेटाइटस आदि। इन बीमारियों, दिन-प्रतिदिन की दुर्घटनाओं और बड़े आप्रेशनों के लिए भारत में प्रतिवर्ष लगभग अस्सी लाख यूनिट से भी अधिक रक्त की आवश्यकता पड़ती है जबकि बीस लाख यूनिट रक्त ही जुट पाता है। आप

आसानी से अनुमान लगा सकते हैं कि कितने रोगी प्रतिवर्ष केवल समय पर रक्त न मिलने के कारण ही प्राणों से अकारण हाथ धो बैठते हैं।

हम लोगों में इतनी चेतना और ज्ञान नहीं कि समय पर किसी के लिए रक्तदान करें ताकि उस व्यक्ति की प्राण-रक्षा की जा सके। अगर हम विचार करें कि उचित समय पर हम किसी ज़रूरतमंद को रक्तदान नहीं करते या विपत्ति के समय रक्तदान में पहल नहीं करते तो इसमें केवल हमारा ही दोष नहीं है, क्योंकि हमें अभिभावकों से रक्तदान जैसा बहुमूल्य संस्कार अल्पमात्र ही प्राप्त होता है। इसके विपरीत यदि कोई बच्चा अपने निर्णय या किसी की प्रेरणा से किसी रक्तदान शिविर में रक्तदान कर देता है तो उसे घर जाने पर पारितोषिक या शाबाशी के स्थान पर कटुशब्द और फटकार को ही सुनना पड़ता है। अभिभावक बड़े होने का दावा तो करते हैं, पर अज्ञानतावश किसी भी तर्क संगत विचार को सुनने को तैयार नहीं होते। इसका मुख्य कारण आम लोगों का अशिक्षित होना और उनमें भाँति-भाँति के भ्रमों से युक्त रूढ़िवादी विचारों का होना ही है। हमारे समाज में साधारण क्या, शिक्षित वर्ग का भी काफी बड़ा भाग इस प्रमाणित तथ्य को मानने से आनाकानी करता है कि सुरक्षित रक्तदान करने से हमारे शरीर में न तो कोई कमज़ोरी आती है और न ही कोई बीमारी लगती है। इन हालातों में यह उम्मीद लगाना कि वे अपने बच्चों को रक्तदान जैसे बहुमूल्य संस्कार देंगे, एक व्यर्थ-सी बात लगती है। इसके विपरीत हमें ऐसे महान व्यक्तियों के भी उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने दस, बीस, पचास या फिर सौ से भी अधिक बार स्वैच्छिक रक्तदान किया है। परन्तु ऐसे व्यक्ति हमारे समाज में बहुत कम हैं।

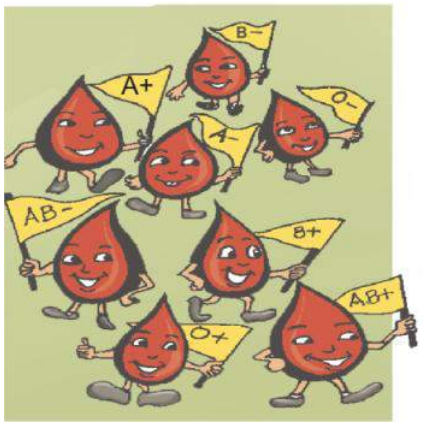

लोगों में रक्तदान एक संस्कार के रूप में न विकसित होने के पीछे उनकी अवैज्ञानिक सोच भी ज़िम्मेवार है। प्रत्येक समय हर ब्लड-ग्रुप की निरंतर आवश्यकता रहती है। ब्लड-ग्रुप (रक्त-समूह) ए-पॉज़िटिव, ए-नेगिटिव, बी-पॉज़िटिव, बी-नेगिटिव, ए-बी-पॉज़िटीव, ए-बी-नेगिटिव, ओ-पॉज़िटिव और ओ-नेगिटिव आठ प्रकार के होते हैं। पॉज़िटिव-ग्रुपों की अपेक्षा नेगिटिव ग्रुप संख्या में बहुत कम होने के कारण उनकी उपलब्धता भी कठिन होती है। यह बात भी नितांत ज़रूरी

है कि हमें अपने ब्लड-ग्रुप की भी जानकारी होनी चाहिए। हमें हमेशा अपने-आप को रक्तदान के लिए तैयार रखना चाहिए, क्योंकि इंसान को केवल इंसान का ही रक्त दिया जा सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति जिसकी आयु 18 वर्ष से 60 वर्ष और वज़न 35 किलोग्राम से कम न हो, प्रत्येक तीन महीने बाद आसानी से स्वैच्छिक रक्तदान कर सकता है। आमतौर पर यह सुनने को मिलता है कि मुझमें तो रक्त की कमी है, मैं कैसे रक्त दे सकता हूँ। रक्तदान करने से पहले डॉक्टर रक्त देने वाले की रक्त-संबंधी जाँच करते हैं और सही पाए जाने पर ही उचित-मात्रा में रक्तदान करवाया जाता है। रक्तदान में केवल पाँच से दस मिनट लगते हैं। इससे शरीर पर किसी प्रकार का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। हम रक्तदान के पश्चात अपने सारे कार्य दिनचर्या अनुसार पुनः आम दिनों की भाँति ही कर सकते हैं।

यहाँ इस बात का ध्यान रखना अति अनिवार्य है कि किस व्यक्ति को रक्तदान नहीं करना चाहिए। उन व्यक्तियों को रक्तदान नहीं करना चाहिए जो किसी संक्रमित रोग से पीड़ित हों, जिनको पीलिए की बीमारी के बाद कम से कम चार वर्ष न हुए हों, गर्भवती महिलाओं को, जिनकी सर्जरी (शल्य चिकित्सा) को कम से कम एक वर्ष न हुआ हो और जिस व्यक्ति को रक्तदान किए तीन महीने न हुए हों। किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को भी रक्तदान नहीं करना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति ने मदिरा का सेवन किया हो तो वह 24 घंटे बाद ही रक्तदान कर सकता है।

बस एक बार अपने मन को तैयार करने की आवश्यकता है, फिर आपका भय दूर हो जाएगा और आप खुद तो रक्तदान करेंगे ही साथ में दूसरों को भी स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित करेंगे। याद रखें, **सभी दानों में सर्वोत्तम रक्तदान ही है।**

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਸਭਿਅਤਾ	=	सभ्यता	ਦੁਰਘਟਨਾ	=	दुर्घटना
ਇਤਿਹਾਸ	=	इतिहास	ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ	=	प्रदूषण
ਧਾਰਮਿਕ	=	धार्मिक	ਚੇਤਨਾ	=	चेतना

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਗਵਾਹ	=	साक्षी	ਲੋੜਮੰਦ	=	ज़रूरतमंद
ਖ਼ੂਨਦਾਨ	=	रक्तदान	ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ	=	अभिभावक
ਕੀਮਤੀ	=	बहुमूल्य	ਇਨਾਮ	=	पारितोषिक
ਸਮਰਥ	=	सक्षम	ਅਨਪੜ੍ਹ	=	अशिक्षित

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) आमतौर पर दान का अर्थ किस रूप में लिया जाता है ?

(ख) सर्वोत्तम दान कौन-सा है ?

(ग) एक मानव दूसरे मानव की जीवन रक्षा कैसे कर सकता है ?

(घ) रक्त की ज़रूरत कब पड़ती है ?

(ङ) रक्त समूह कितने प्रकार के होते हैं ?

(च) किन व्यक्तियों को रक्तदान नहीं करना चाहिए ? पाठ के आधार पर उत्तर दें।

(छ) रक्तदान करने से शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) रक्तदान को एक संस्कार के रूप में क्यों नहीं विकसित किया जा सका ?

(ख) स्वैच्छिक रक्तदान से आप क्या समझते हैं ?

(ग) क्या रक्तदान करने वाले व्यक्ति की आयु, भार और स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जाता है ? यदि हाँ, तो समस्त बातों को लिखें।

(घ) आपने कई स्थानों पर रक्तदान शिविर लगा देखा होगा। वहाँ पर जाकर डॉक्टर/नर्स से इस प्रक्रिया को समझें और अपनी डायरी में नोट करें।

5. नये शब्द बनायें :-

सर्व + उत्तम = सर्वोत्तम　　सर्व + _____ = _____

अन + भिज्ञ = _____　　अन + _____ = _____

6. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिख कर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें :-

प्राणों की रक्षा करना _____ _____

तुच्छ पड़ जाना _____ _____

प्राण हर लेना _____ _____

अपनी चपेट में लेना _____ _____

हाथ धो बैठना _____ _____

आनाकानी करना _____ _____

7. 'ता' शब्दांश लगाकर भाववाचक संज्ञा बनायें :-

आधुनिक + ता = _____　　आवश्यक + ता = _____

अनभिज्ञ + ता = _____　　अज्ञान + ता = _____

8. नीचे रक्तदान से जुड़े कुछ वाक्य दिये गये हैं। उन पर सही (✓) या गलत (X) का चिह्न लगायें :-

(क) कितने रोगी प्रतिवर्ष केवल समय पर रक्त न मिलने के कारण ही प्राणों से अकारण हाथ धो बैठते हैं। ☐

(ख) सभी लोगों को रक्तदान के बारे में पूरी जानकारी होती है। ☐

(ग) प्रत्येक व्यक्ति को अपना ब्लड-ग्रुप पता होना चाहिए। ☐

(घ) इन्सान को केवल इंसान का ही रक्त दिया जा सकता है। ☐

(ङ) स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति पर सुरक्षित रूप से रक्तदान करने पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ☐

9. अंतर समझें :-

खाद	:	सड़ा-गलाकर बनाई गयी गोबर
खाद्य	:	खाने योग्य
सम्मान	:	इज़्ज़त
समान	:	बराबर
सामान	:	वस्तुएँ, सामग्री
जहाँ	:	जिस जगह
जहां (जहान)	:	संसार, लोक
हालत	:	परिस्थिति, वर्तमान स्थिति, अवस्था, दशा
हालात	:	परिस्थितियाँ, स्थितियाँ
दवा	:	दवाई
दावा	:	अधिकार, हक, न्याय हेतु न्यायालय में दिया गया प्रार्थना-पत्र
परितोषक	:	संतुष्ट या खुश करने वाला
पारितोषिक	:	इनाम
कॉफी	:	कहवा, एक पेड़ का बीज जिसे भूनकर दूध, शक्कर मिलाकर पेय पदार्थ बनाया जाता है
काफी	:	बहुत

11. शुद्ध करके लिखें :-

शाबासी	= _____	आपति	= _____	असानी	= _____
उमीद	= _____	उदारण	= _____	जिमेवारी	= _____
कटूशब्द	= _____	अवश्यकता	= _____	सरिष्ट	= _____
अनभिगयता	= _____	बीमारियाँ	= _____	सामगरी	= _____
दुरघटनाएँ	= _____	तुछ	= _____	शान्ती	= _____
भरम	= _____	वियर्थ	= _____	उचीत	= _____

10. **'इक' और 'इत' लगाकर नये शब्द बनायें :-**

इक			इत		
धर्म	:	धार्मिक	प्रमाण	:	प्रमाणित
अधुना	:	_____	पुलक	:	_____
विज्ञान	:	_____	सुरक्षा	:	_____
स्वेच्छा	:	_____	शिक्षा	:	_____
नीति	:	_____	पीड़ा	:	_____
परिवार	:	_____	आनंद	:	_____
इतिहास	:	_____	सम्मान	:	_____

12. **अपने मित्र/सहेली को रक्तदान का महत्व समझाते हुए पत्र लिखें।**

13. **'रक्तदान' पर नारे लिखें।**

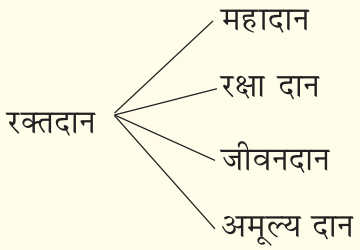

अध्यापन निर्देश (क) 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द में प्रयुक्त पहले स्वर को वृद्धि अर्थात् 'अ' को 'आ', इ,ई, ए को 'ऐ' तथा उ, ऊ, ओ को औ हो जाता है। जैसे- संसार-सांसारिक (अ को आ),
विवाह-वैवाहिक (इ को ऐ), नीति-नैतिक (ई को ऐ) वेद-वैदिक (ए को ऐ) मुख-मौखिक (उ को औ) मूल-मौलिक (ऊ को औ) योग-यौगिक (ओ को औ)

अपवाद :- कुछ शब्दों में 'इक' प्रत्यय होने पर पहले स्वर को आदि वृद्धि नहीं होती जैसे-प्रशासन-प्रशासनिक, क्रम-क्रमिक आदि

(ख) (1) कुछ संज्ञा शब्दों के अंत में 'आ' स्वर लगा होता है वहाँ 'इत' प्रत्यय होने पर अंतिम आ स्वर का लोप हो जाता है जैसे-पीड़ा-पीड़ित

(2) कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनके साथ 'इत' प्रत्यय अलग तरह से लगता है, अत: यह अपवाद है। जैसे-विकास-विकसित इसमें मध्य स्वर 'आ' का लोप हुआ है। संक्रमण-संक्रमित (इसमें अंतिम अक्षर का ही लोप हो गया है) प्रेरणा-प्रेरित इसमें मध्य अक्षर 'र' के साथ इत प्रत्यय लगा है और अंतिम अक्षर का लोप हो गया है।

पाठ-4

फूल और काँटा

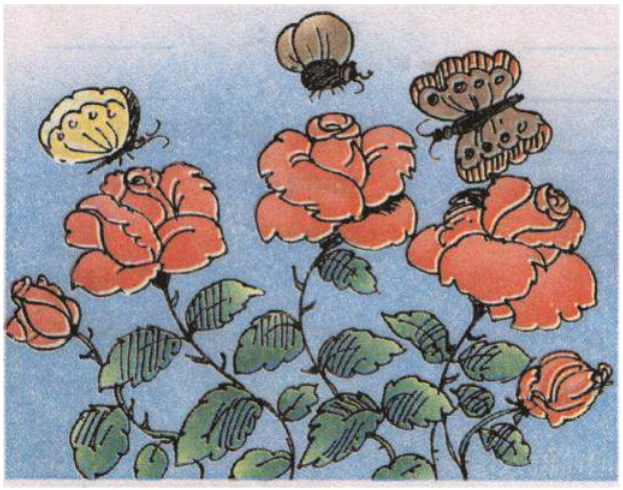

हैं जन्म लेते जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी।
एक ही सी चाँदनी है डालता।।

मेह उन पर है बरसता एक-सा।
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बहीं ।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें।
ढंग उनके एक से होते नहीं।।

छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार डूबी तितलियों का पर कतर
भौंर का है बेंध देता श्याम तन।।

फूल लेकर तितलियों को गोद में
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगन्ध और निराले रंग से।
है सदा देता कली का जी खिला।।

है खटकता एक सब की आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।।

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਪੌਦਾ, ਬੂਟਾ	=	पौधा	ਢੰਗ	=	ढंग
ਚੰਨ	=	चाँद	ਵਢਿਆਈ	=	बड़ाई
ਫੁੱਲ	=	फूल	ਵਿੱਨ੍ਹਣਾ	=	बेंधना
ਅੱਖ	=	आँख	ਉਂਗਲੀਆਂ	=	उँगलियाँ
ਹਵਾ	=	हवा	ਗੋਦ	=	गोद

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਕੰਡਾ	=	काँटा	ਖੰਭ	=	पर
ਮੀਂਹ	=	मेह	ਸ਼ਰੀਰ	=	तन
ਵਸਤਰ	=	वसन	ਸਿਰ	=	सीस
ਅਨੋਖਾ	=	अनूठा	ਭੰਵਰਾ	=	भौंरा

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) फूल और काँटा कहाँ जन्म लेते हैं ?
(ख) काँटे की क्या विशेषता होती है ?
(ग) फूल की क्या विशेषता होती है ?
(घ) फूल और काँटा किस का प्रतीक हैं ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) फूल और काँटे को कौन-कौन सी समान परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं ?
(ख) फूल और काँटे में स्वभावगत क्या अंतर है ?
(ग) आपकी दृष्टि में कुलवान व्यक्ति महान/बड़ा होता है या गुणवान। अपने विचार लिखें।
(घ) 'किस----बड़प्पन की कसर' काव्य-पंक्ति की सप्रसंग व्याख्या करें।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनके वाक्य बनायें :-

प्यार में डूबना _____ _____
पर कतरने _____ _____

जी खिल उठना _____ _____

आँखों में खटकना _____ _____

कसर होना _____ _____

गोद बिठाना _____ _____

सीस (सिर) पर सोहना _____ _____

6. **इन शब्दों के समानार्थक शब्द लिखें :-**

फूल	=	पुष्प, प्रसून	मेह	=	_____,_____
चाँद	=	_____,_____	हवा	=	_____,_____
चाँदनी	=	_____,_____	भौंरा	=	_____,_____

7. **बच्चो! कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं। नीचे दिए गए अनेकार्थक शब्दों के अर्थ समझते हुए उन्हें वाक्यों में प्रयोग करें:**

शब्द		अर्थ	वाक्य
कुल	–	पूरा, सब, सारा	_____
कुल	–	खानदान, वंश	_____
सदा	–	हर समय	_____
सदा	–	आवाज़, पुकार	_____
वर	–	उत्तम, श्रेष्ठ	_____
वर	–	देवता से प्रसाद रूप में कुछ माँगना	_____
वर	–	नव विवाहिता स्त्री का पति	_____
पर	–	पराया	_____
पर	–	पंख	_____
खिलना	–	विकसित होना	_____
खिलना	–	प्रसन्न होना	_____
खिलाना	–	खाने में प्रवृत्त करना	_____
खिलाना	–	खेल खेलाना	_____

पाठ 5

हार की जीत

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देख कर आता था। वह घोड़ा सुंदर तथा बड़ा बलवान था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, खुद दाना खिलाते और देख-देख कर प्रसन्न होते थे। वे गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। सुलतान के बिना जीना उनके लिए बहुत ही कठिन था।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। धीरे-धीरे सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका मन उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

''कहो, इधर कैसे आ गये?''

''सुलतान की चाह खींच लाई।''

''विचित्र जानवर है। देखोगे, प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है। ''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''

''कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।''

''क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।''

''इच्छा तो बहुत दिनों से थी, लेकिन आज आ सका।''

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्ग सिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, ''परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा।''

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर ले गए। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था। जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। जाते-जाते उसने कहा, ''बाबा जी यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती, सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। सहसा एक ओर से आवाज़ आई - ''ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।''

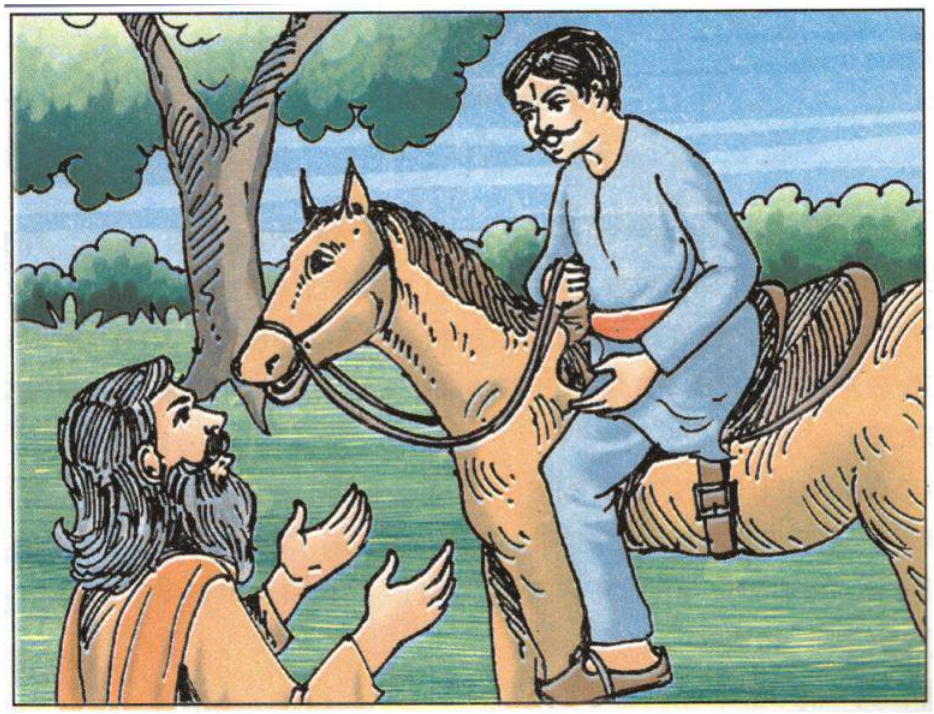

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दु:खी हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम उनके हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए जा रहा है। वह खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''ज़रा ठहर जाओ।''

खड्गसिंह ने आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, ''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ।''

खड्ग सिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के

लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुम्हें इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड्गसिंह ने आश्चर्य से पूछा, ''बाबा जी इसमें आपको क्या डर है?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, ''लोगों को यदि इस घटना का पता चल गया तो वे किसी ग़रीब पर विश्वास न करेंगे। ''

बाबा भारती चले गए परंतु उनके शब्द खड्ग सिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है, मनुष्य नहीं देवता हैं।

x x x x x

रात के अंधेरे में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। खड्ग सिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, ''अब कोई ग़रीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।''

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਲਹਿਲਹਾਂਦੇ	=	लहलहाते	ਕੀਰਤੀ	=	कीर्ति
ਸੁਲਤਾਨ	=	सुलतान	ਛਵੀ	=	छवि
ਘੋੜਾ	=	घोड़ा	ਘਮੰਡ	=	घमंड
ਮੰਦਰ	=	मंदिर	ਅਪਾਹਜ	=	अपाहिज
ਭਗਵਾਨ	=	भगवान	ਲਗਾਮ	=	लगाम

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-

ਇੱਛਾ	=	चाह	ਬੇਚੈਨ	=	अधीर
ਅਨੋਖਾ	=	विचित्र	ਹਵਾ ਦੀ ਗਤੀ	=	वायु वेग
ਤਬੇਲਾ	=	अस्तबल	ਵਾਂਗ	=	नाईं
ਕੰਗਾਲ	=	कंगले	ਝੂਠ	=	मिथ्या
ਝੌਂਪੜੀ	=	कुटिया	ਮਤਰੇਆ	=	सौतेला

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) बाबा भारती के घोड़े का क्या नाम था?

(ख) खड्गसिंह कौन था?

(ग) बाबा भारती अपने घोड़े को देखकर खुश क्यों होते थे?

(घ) ''बाबा जी यह घोड़ा अब न दूँगा।'' यह वाक्य किसने कहा और किसे कहा?

(ङ) ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना'' यह वाक्य किसने कहा, किसे और कब कहा?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) बाबा भारती को अपना घोड़ा क्यों प्रिय था?

(ख) खड्गसिंह ने घोड़े को प्राप्त करने के लिए क्या चाल चली?

(ग) बाबा भारती ने खड्ग सिंह से क्या प्रार्थना की?

(घ) खड्गसिंह ने घोड़ा क्यों लौटा दिया?

(ङ) इस कहानी की महत्वपूर्ण पंक्ति ढूँढ़कर लिखें, जिसने डाकू का हृदय परिवर्तित कर दिया।

5. इन मुहावरों के अर्थ लिखकर उनको वाक्यों में प्रयोग करें :-

हृदय अधीर होना _____ _____

शब्द कानों में गूँजना _____ _____

हृदय पर साँप लोटना _____ _____

हाथ से छूटना _____ _____

गले लिपटकर रोना _____ _____

दिल टूटना _____ _____

नेकी के आँसू बहना _____ _____

मुँह मोड़ना _____ _____

पीठ पर हाथ फेरना _____ _____

मन मोह लेना _____ _____

कीर्ति कानों तक पहुँचना _____ _____

चाह खींच लाना _____ _____

हृदय पर छवि अंकित हो जाना _____ _____

हृदय में हलचल होना _____ _____

वायु वेग से उड़ना _____ _____

आश्चर्य का ठिकाना न रहना _____ _____

तन कर बैठना _____ _____

6. लिंग बदलें :-

घोड़ा	=	घोड़ी	बालिका	=	_____
बेटा	=	_____	पुत्री	=	_____
दास	=	_____	पिता	=	_____
बकरा	=	_____	देवी	=	_____

7. विपरीत शब्द लिखें :-

सावधान	=	असावधान	ग़रीब	=	अमीर
भय	=	_____	सुख	=	_____
विश्वास	=	_____	संध्या	=	_____
संतोष	=	_____	छाया	=	_____
स्वीकार	=	_____	भला	=	_____

8. शुद्ध रूप लिखें :-

आननद	=	आनंद	प्रमात्मा	=	_____
नमष्कार	=	_____	परसन्न	=	_____
हिरद्य	=	_____	कीरती	=	_____

9. इन शब्दों में 'र' पूरा है या आधा, लिखें :-

प्रकट = _____

आश्चर्य = _____

कीर्ति = _____

10. इन अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखें :-

जहाँ पर घोड़े रखे जाते हैं = _____

जिसका कोई अंग ठीक न हो = _____

11. इन वाक्यों में विशेषण शब्दों को ढूँढ़कर लिखें :-

(क)	वह घोड़ा सुंदर तथा बड़ा बलवान था।	**सुंदर**	**बड़ा बलवान**
(ख)	खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।	_____	_____
(ग)	बाबा, मैं दु:खी हूँ।	_____	_____

(घ) मैं उनका सौतेला भाई हूँ। _____ _____

(ङ) चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल, ठंडे जल से स्नान किया। _____ _____

12. इन वाक्यों में रेखाँकित पदों के कारक बतायें :-

(क) वे गाँव से बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते थे। _____,_____

(ख) उसके हृदय में हलचल होने लगी। _____,_____

(ग) उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। _____,_____

(घ) बाबा ने घोड़े को रोक लिया। _____,_____

(ङ) उनके हाथ से लगाम छूट गई। _____,_____

(च) वह धीरे-धीरे अस्पताल के फाटक पर पहुँचा। _____,_____

(छ) वे घोड़े को खोलकर बाहर ले गये। _____,_____

योग्यता विस्तार

* इस कहानी में बाबा भारती और खड्गसिंह के संवाद कहानी को चरम सीमा तक पहुँचाने में सहायक हुए हैं। कक्षा में अध्यापक उन संवादों को उचित भाव-भंगिमा तथा तान-अनुतान के साथ बच्चों को बुलवाये।

** कई बार किसी व्यक्ति के मुख से निकले वचन किसी के जीवन की दिशा बदल देते हैं। बाबा भारती के उन वाक्यों को लिखो जिन्होंने डाकू खड्गसिंह का हृदय परिवर्तित कर दिया।

*** इसी भाव को लेकर लिखी गई एक कहानी है 'अंगुलिमाल'। उस कहानी को पढ़ो।

प्रयोगात्मक व्याकरण

(क) घोड़ा हिनहिनाया।

(ख) घोड़ा हिनहिना रहा है।

(ग) घोड़ा हिनहिनायेगा।

उपर्युक्त वाक्यों में ध्यान से क्रिया को पहचानिए। ध्यान दीजिए कि पहले वाक्य में क्रिया हो गयी है (हिनहिनाया) दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है- (हिनहिना रहा है) तथा तीसरे वाक्य में क्रिया आने वाले समय में अभी होगी (हिनहिनायेगा)। दरअसल क्रिया से यह भी पता चलता है कि काम कब हुआ अर्थात् क्रिया होने का समय। इसे ही क्रिया का काल कहते हैं।

अतएव क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का ज्ञान हो उसे 'काल' कहते हैं।

(क) बाबा ने घोड़े को रोका।

(ख) खड्ग सिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था।

(ग) बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे।

इन वाक्यों में 'रोका', 'था' तथा 'जा रहे थे' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया का करना या होना बीते हुए समय में हुआ है। **अत: बीते समय को भूतकाल कहते हैं।**

(क) अपाहिज घोड़े को दौड़ाए जा रहा है।

(ख) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता है।

(ग) अपाहिज घोड़े को दौड़ाता होगा।

इन वाक्यों में 'दौड़ाए जा रहा है', 'दौड़ाता है', तथा 'दौड़ाता होगा' क्रियाएँ हैं। इनमें क्रिया चल रहे समय अर्थात् वर्तमान काल में हो रही है **अत: चल रहे समय को वर्तमान काल कहते हैं।**

(क) बाबा जी, यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

(ख) उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।

उपर्युक्त वाक्यों में 'रहने दूँगा' तथा 'मोह लेगी' क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं से भविष्य में कार्य के होने का पता चलता है अर्थात् अभी कार्य हुआ नहीं है। **अत: जब क्रिया का करना या होना आने वाले समय में पाया जाता है, उसे भविष्यत काल कहते हैं।**

याद रखें :-

काम का करना या होना- यह बतलाये क्रिया हमें
भूत, वर्तमान है भविष्य-यह बतलाये काल हमें

पाठ 6

राष्ट्र के गौरव प्रतीक

छात्रो! आज हम अपने स्कूल के प्राँगण में लगी राष्ट्र गौरव प्रतीकों की प्रदर्शनी देखेंगे।

(अध्यापक प्रदर्शनी की ओर पंक्ति बनाकर चलने का इशारा करते हैं)

सभी छात्र : (इकट्ठे ही) सर! ये राष्ट्रीय प्रतीक क्या होते हैं?

अध्यापक : बच्चो! यही जानने के लिए तो हम प्रदर्शनी देखने जा रहे हैं।

(अध्यापक की बात सुनते ही उत्साहित हुए छात्र प्रदर्शनी की तरफ पग भरते हुए चलने लगे।)

[हाल के अंदर पहुँच कर]

अध्यापक : बच्चो! प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र अपनी पहचान के प्रतीक निश्चित करता है। जो उसके आत्म सम्मान, स्वाभिमान, एकता एवं गौरव के प्रतीक होते हैं। उन्हें राष्ट्रीय प्रतीक कहा जाता है। जैसे- राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्रीय पशु-पक्षी इत्यादि।

[आगे चलते हुए, राष्ट्रीय ध्वज की ओर इशारा करके]

अध्यापक : बच्चो! यह क्या है?

सभी छात्र : (मिलकर/एक साथ) हमारा राष्ट्रीय ध्वज।

अध्यापक : जैसा कि आपको पता ही है इसमें तीन रंग की पट्टियाँ होती हैं, इसलिए इसे तिरंगा भी कहते हैं। इसे सभी राष्ट्रीय पर्वों और विशेष अवसरों पर स्कूलों, सरकारी कार्यालयों के मुख्य भवनों पर तो इसे लहराया ही जाता है, किंतु 23 जनवरी, 2004 से संविधान द्वारा भारत के सभी नागरिकों को इसे अपने घर, सार्वजनिक पार्क आदि में सम्मान के साथ फहराने का अधिकार दिया है।

नव्या : सर! लाल किले पर इसे कौन फहराता है?

अध्यापक : बच्चो! प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस [15 अगस्त] को देश के प्रधानमंत्री और गणतंत्र दिवस [26 जनवरी] को देश के राष्ट्रपति राजधानी दिल्ली में इसे लालकिले पर फहराते हैं।

जैसमीन : (आगे बढ़कर) सर ! ये तो हमारा राष्ट्रीय गान है, जिसे हम सुबह स्कूल की सभा में गाते हैं।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा-
द्राविड़-उत्कल-बंग
विन्धय-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष माँगे
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य-विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे।

रवीन्द्र नाथ टैगोर

उदय : इसके नीचे रवीन्द्रनाथ टैगोर क्यों लिखा है, सर?

अध्यापक : बेटे! यह राष्ट्रीय गान के रचयिता का नाम है। ये भारत के प्रसिद्ध विद्वान एवं कवि थे । इन्होंने 27 दिसंबर 1911 में इसकी रचना की और 24 जनवरी 1950 को इसे राष्ट्रीय गान के रूप में स्वीकार किया गया।

दिव्या : सर ! जब ये गाया जाता है तो हम सावधान क्यों खड़े होते हैं?

अध्यापक : शाबाश दिव्या! आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया। जब राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाये या राष्ट्रीय गान गाया जाये तब हमें इन्हें सम्मान देने के लिए शांति पूर्वक (सावधान) खड़े रहना चाहिए। इसे गाने में मात्र 52 सैकेंड ही तो लगते हैं।

अध्यापक : (आगे चलकर अनुसरण करने का इशारा करते हुए) यह अगला प्रतीक हमारा राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' है।

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्
शुभ्र ज्योत्स्न पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिनीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे मातरम्

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय

गुंजन : सर ! इस गीत के रचनाकार कौन हैं ?

अध्यापक : इस गीत की रचना प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने सन् 1874 में की थी। वैसे तो यह गीत बाँग्ला-संस्कृत भाषा को मिलाकर 26 पंक्तियों में लिखा गया है, किंतु इसकी पहली सात पंक्तियाँ ही राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार की गई हैं।

आँचल : (आगे बढ़कर) देखो ! देखो ! ये तीन शेरों वाला चित्र।

अध्यापक : बच्चो ! ये हमारा राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तम्भ है, जिसके शीर्ष पर चार सिंह बने हैं, जो कि शक्ति, साहस एवं आत्मविश्वास के सूचक हैं।

विनय : (कुछ सोचकर) परंतु सर! इसमें तो तीन सिंह ही दिखाई दे रहे हैं।

अध्यापक : बिल्कुल ठीक कह रहे हो। बेटे! चौथा सिंह इनकी ओट में है। इनके ठीक नीचे सम्राट अशोक का वही धर्म-चक्र है, जो तिरंगे में भी है। चक्र के साथ चारों दिशाओं के संरक्षक के रूप में : पूर्व दिशा में हाथी, पश्चिम दिशा में बैल, उत्तर दिशा में सिंह और दक्षिण दिशा में सरपट दौड़ता घोड़ा चिह्नित है। इन्हीं के बीच एक कमल का फूल बना है। इसके नीचे 'सत्यमेव जयते' आदर्श वाक्य लिखा है। जिसका अर्थ है- सत्य की हमेशा जीत होती है।

चन्दन : (राष्ट्रीय चिह्न की ओर इशारा करके) सर ये तो रुपयों और सिक्कों पर छपा रहता है।

उदय : हाँ सर ! मेरे पिता जी पुलिस में हैं, उनकी टोपी पर भी यही चिह्न बना है।

अध्यापक : बच्चो ! यह राष्ट्रीय चिह्न भारत सरकार के अधिकारिक लेटरहेड का भाग है। यह राष्ट्रपति व राज्यपालों की सरकारी मोहर है। यह सभी भारतीय मुद्राओं पर अंकित होता है। यह भारत गणराज्य के राजनयिक, पासपोर्ट, पहचान पत्र आदि पर भी छपा होता है। यह राष्ट्रीय चिह्न स्वतंत्र भारत की पहचान तथा सम्प्रभुता का प्रतीक है।

दिव्या : (अगले प्रतीक की ओर इशारा करते हुए) सर! ये चिह्न तो कल हमने दूरदर्शन पर देखा था।

अध्यापक : हाँ बेटे! यह हमारी राष्ट्रीय मुद्रा है। इसे 15 जुलाई, 2010 को ही आधिकारिक रूप में मान्य किया गया है। आई.आई.टी., गुवाहाटी के प्रोफैसर डी. उदय कुमार ने इसको तैयार किया है। इस डिज़ाइन की खास बात यह है कि इसमें देवनागरी लिपि के र और रोमन लिपि के आर (R बगैर डंडे के) दोनों की छवि मिलती है। इससे भारतीय रुपये को पहले अंग्रेज़ी में

RS. या Re या फिर INR के रूप में दर्शाया जाता था। किंतु अब के बाद रुपया पाँचवीं ऐसी मुद्रा बन गया है, जिसे उसके चिह्न से पहचाना जाएगा। हमारा यह चिह्न भारतीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता का अद्‌भुत मेल जान पड़ता है।

करिश्मा :- (आगे बढ़ते हुए) सर! ये तो हम सबके प्रिय बापू हैं न?

अध्यापक : हाँ बच्चो! ये हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं।

जूही : सर, इन्हें राष्ट्रपिता क्यों कहते हैं?

अध्यापक : महात्मा गाँधी ने भारत को जगाया। अपना काम स्वयं करने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की राह दिखाई। सत्याग्रह और असहयोग जैसे आंदोलन चलाकर अंग्रेज़ी शासन की नींव उखाड़ दी। भारत माता को आज़ादी दिलाई और नये राष्ट्र का निर्माण किया। इसलिए हम उन्हें राष्ट्रपिता और बापू कहते हैं। साथ ही तुम्हें बता दूँ कि बापू के जन्मदिन (2 अक्तूबर) को गाँधी जयंती यानि राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है।

नैना : सर! स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) एवं गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) भी तो हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं न?

अध्यापक : बिल्कुल ठीक, शाबाश! याद रखा आपने।

करिश्मा : सर ! ये आम और कमल का फूल-----

जूही : [आगे बढ़कर बीच में टोकते हुए] और ये नदी सर! क्या ये भी हमारे राष्ट्रीय प्रतीक हैं?

अध्यापक : हाँ-हाँ, आम हमारा राष्ट्रीय फल है। कमल हमारा राष्ट्रीय फूल और ये गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी है। ये सभी क्रमशः अपने स्वाद, मिठास, सुंदरता, निर्मलता एवं पवित्रता के लिए मशहूर हैं।

रुचिका : (आगे बढ़कर) सर! ये मोर और बाघ।

अध्यापक : तुम सब जानने के लिए कितने उत्सुक हो रहे हो। धीरज रखो बारी-बारी सब

बताता हूँ। बच्चो! मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है, जो अपनी सुंदरता के लिए न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी चर्चित है। (बाघ की ओर इशारा करके) वीरता, दृढ़ता एवं साहस का प्रतीक बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है। भारत सरकार ने इन दोनों को पकड़ने, मारने और कैद करने पर प्रतिबंध लगाया हुआ है।

अभिषेक : सर! यह आगे हॉकी है, क्रिकेट का बल्ला क्यों नहीं?

अध्यापक : छात्रो ! वास्तव में हॉकी के खेल में खिलाड़ियों ने सन् 1928 से लेकर सन् 1956 तक भारत को छः ओलम्पिक स्वर्ण पदक दिलवाए। इस बीच उन्होंने चौबीस मैच खेले और सभी के सभी जीते। इसलिए इसे हमारा राष्ट्रीय खेल निश्चित किया गया।

उदय : सर! यह कैलेंडर तो हम सबके घर में होता है जी।

अध्यापक : बेटे! यह हमारा राष्ट्रीय कैलेण्डर : शक सम्वत् है। जिसे 22 मार्च 1957 को अपनाया गया था। इससे पहले भारत में ईसा सम्वत् कैलेंडर का उपयोग होता था। शक सम्वत् कैलेंडर में एक वर्ष में 365 दिन और 12 देसी महीने चैत्र से फाल्गुन तक होते हैं। चैत्र की प्रथम तिथि यानि देसी वर्ष का आरंभ सामान्य वर्ष में 22 मार्च और लीप वर्ष में 21 मार्च को होता है। इस कैलेंडर का ग्रेगोरियन कैलेंडर से सटीक मिलान किया होता है।

मुकुल : यह तो हमारे स्कूल के बरगद के वृक्ष जैसा ही है?

अध्यापक : बच्चो! बरगद हमारा राष्ट्रीय वृक्ष है। इस वृक्ष की टहनियाँ अपने तने से लिपट-लिपट कर उसे और मज़बूत कर देती हैं। यह वृक्ष हमें अपनी संस्कृति एवं विरासत से जुड़े रहने का संदेश देता है।

इन सभी राष्ट्रीय प्रतीकों की रक्षा एवं सम्मान के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना चाहिए। यही हमारा परम कर्त्तव्य है। (पूरी प्रदर्शनी घूमने के बाद हाल से बाहर आते हुए अध्यापक और अनुसरण करते हुए सभी विद्यार्थी)

सभी बच्चे : सर! हमने ऐसी अनोखी एवं ज्ञान से भरपूर प्रदर्शनी कभी नहीं देखी। हम सब आपके आभारी हैं।

अध्यापक : ठीक है बच्चो! अब तुम सब कक्षा में चलकर सभी राष्ट्रीय प्रतीकों को अपनी-अपनी कॉपी पर लिख लो। कल घर से इनके चित्र ढूँढ़कर कॉपी पर लगाकर लाना। (सभी बच्चे खुशी-खुशी पंक्ति बनाकर अध्यापक का अनुसरण करते हुए प्रस्थान करते हैं।)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਰਾਸ਼ਟਰ	=	राष्ट्र	ਤਿਰੰਗਾ	=	तिरंगा
ਪ੍ਰਤੀਕ	=	प्रतीक	ਧਰਮ ਚੱਕਰ	=	धर्म चक्र
ਏਕਤਾ	=	एकता	ਸ਼ੇਰ	=	शेर
ਪੱਟੀਆਂ	=	पट्टियाँ	ਰਾਸ਼ਟਰਪਤੀ	=	राष्ट्रपति

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें :-

ਨੁਮਾਇਸ਼	=	प्रदर्शनी	ਸੋਨੇ ਦੇ ਮੈਡਲ	=	स्वर्ण पदक
ਝੰਡਾ	=	ध्वज	ਰੋਕ	=	प्रतिबन्ध
ਚੌਵੀ	=	चौबीस	ਫੁੱਲ	=	पुष्प
ਸ਼ੇਰ	=	बाघ	ਪਿੱਛੇ ਚਲਣਾ	=	अनुसरण करना

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) राष्ट्रीय प्रतीक किसे कहते हैं ?

(ख) हमारे देश के झंडे को क्या कहते हैं ?

(ग) राष्ट्रीय गान के रचयिता का नाम लिखें।

(घ) राष्ट्रीय गीत कौन-सा है ?

(ङ) राष्ट्रीय चिह्न कौन-सा है ?

(च) राष्ट्रीय फल आम किस लिए मशहूर है ?

(छ) गंगा नदी की क्या विशेषता है ?

(ज) भारत सरकार ने किस पशु और पक्षी के शिकार पर रोक लगायी हुई है ? और क्यों ?

(झ) हॉकी को राष्ट्रीय खेल के रूप में क्यों स्वीकार किया गया है ?

(ञ) बरगद का वृक्ष हमें क्या संदेश देता है ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) राष्ट्रीय झंडे के बारे में आप क्या जानते हो ?

(ख) राष्ट्रीय चिह्न का प्रयोग कहाँ-कहाँ पर होता है ? पता करके लिखें।

5. नये शब्द बनायें :-

राष्ट्र + ईय = _____

भारत + ईय = _____

मानव + ईय = _____

सम्पादक + ईय = _____

सराहना + ईय = _____

देश + ईय = _____

6. पाठ में आये सभी चिह्न/प्रतीकों के चित्र इकट्ठे करें और उन्हें अपनी कॉपी पर चिपका कर प्रत्येक चिह्न पर पाँच-पाँच वाक्य लिखें।

7. राष्ट्रीय-गान, राष्ट्रीय-गीत, जुबानी याद करें।

8. राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत को सुलेख के रूप में चार्ट पर लिखकर कक्षा की दीवार पर लटकायें।

पाठ 7

आ री बरखा !

आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

पेड़ सब ठूँठ भए,
पंछी चहकना भूल गए।
कुम्लाह गए हैं पुष्प सारे,
बिखरा दो तुम बादल कारे।
सौंदर्य रहित इस प्रकृति का
श्रृंगार बन के तू आ,
आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

जहाँ कभी बहती थी नदियाँ
सूखे पत्थर दिख रहे
सिंधु दुर्बल हो चला
वियोग तेरा कैसे सहे।
अपने प्रिय के जीवन-हेतु
गीत मिलन के तू गा,
आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

कश्तियाँ सब बच्चों की
तैरने को हैं खड़ी हुईं
उधर किसानों की भी आँखें
बस तुझ पर ही हैं गड़ी हुईं
खाली पड़ी कोठरियों में
अन्न के दाने तू भर जा,
आ री बरखा!
आ री बरखा!
इस तपती धरा पर
अपना शीतल जल बरसा।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਪੇੜ	=	पेड़	ਕਿਸ਼ਤੀਆਂ	=	कश्तियाँ
ਪੰਛੀ	=	पंछी	ਕਿਸਾਨ	=	किसान
ਪੱਥਰ	=	पत्थर	ਕੋਠੜੀ	=	कोठरी

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਮੀਂਹ	=	वर्षा/बरखा	ਸਾਗਰ	=	सिंधु
ਪ੍ਰਿਥਵੀ	=	धरा	ਅੱਖਾਂ	=	आँखें
ਫੁੱਲ	=	पुष्प	ਗਰਮ	=	तपती

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) वर्षा ऋतु से पूर्व कौन-सी ऋतु होती है ?

(ख) गर्मी के कारण प्रकृति कैसी दिखाई देती है ?

(ग) नदियों में सूखे पत्थर क्यों दिखाई देने लगे हैं ?

(घ) सागर की दुर्बलता का क्या कारण था ?

(ङ) बच्चे वर्षा की प्रतीक्षा क्यों करते हैं ?

(च) किसान वर्षा से क्या माँग रहे हैं ?

4. इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या करें :-

जहाँ कभी बहती थी नदियाँ
सूखे पत्थर दिख रहे,
सिंधु दुर्बल हो चला
वियोग तेरा कैसे सहे।

5. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

बरखा = _____,_____

धरा = _____,_____

पेड़ = _____,_____

जल = _____,_____

पंछी = _____,_____

पुष्प = _____,_____

बादल = _____,_____

नदी = _____,_____

सिंधु = _____,_____

पत्थर = _____,_____

किश्ती = _____,_____

6. विपरीत शब्द लिखें :-

शीतल = _____

कुम्हलाना = _____

बिखराना = _____

दुर्बल = _____

वियोग = _____

मिलन = _____

7. नीचे दिये गए बॉक्स में 'बरखा' के समानार्थक शब्द दिये गये हैं, उन्हें ढूँढ़िए और लिखिये।

1. मेह
2. _____
3. _____
4. _____
5. _____
6. _____
7. _____
8. _____
9. _____

च	धा	पा	छीं	टा	झ
में	ब	व	क	नी	ड़ी
ह	र	स	मे	ह	बूँ
त	खा	सा	क	बा	दा
व	श	त	णी	रि	बाँ
र्षा	श	भ	म	श	दी
ज	ल	वृ	ष्टि	ही	का

8. (क) वर्षा ऋतु का प्रकृति और मानव पर क्या प्रभाव पड़ता है। दस वाक्यों में लिखें।

(ख) वर्षा ऋतु पर कोई गीत लिखने का प्रयास करें।

(ग) कविता को पढ़कर वर्षा से संबंधित चित्र बनायें।

(घ) आप कभी वर्षा में नहाये हैं ? यदि हाँ तो अपने अनुभव को पाँच वाक्यों में लिखें।

9. (क) जानिये : छः ऋतुओं की सूची

क्रम	ऋतु	महीना
1.	बसंत ऋतु	(चैत्र – वैशाख)
2.	ग्रीष्म ऋतु	(ज्येष्ठ – आषाढ़)
3.	वर्षा ऋतु	(श्रावण – भाद्रपद)
4.	शरद ऋतु	(आश्विन – कार्तिक)
5.	हेमंत ऋतु	(मार्गशीर्ष – पौष)
6.	शिशिर ऋतु	(माघ – फाल्गुन)

(ख) वर्षा के सम्बन्ध में यह भी जानिये :-

वर्षा काल	–	बहार, मानसून, सावन का महीना, सावन भादो
वर्षा हीनता	–	अकाल, अनावृष्टि, सूखा
अनवरत(लगातार) वर्षा	–	झड़ी, मूसलाधार
तीव्र वर्षा	–	धुआँधार वर्षा, घनघोर वर्षा
प्रथम वर्षा दिन	–	आषाढ़ का प्रथम दिवस
ओला वर्षा	–	ओलावृष्टि
हिम वर्षा	–	हिम पात
क्षीण वर्षा	–	फुहार, रिमझिम, बूँदाबाँदी

पाठ-8

विजय-दिवस

''हार्दिक बेटा, आधे घंटे तक हमारी ट्रेन चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन पर पहुँचने वाली है और वहाँ केवल दस मिनट रुकेगी। आप तैयार रहना, हमें जल्दी से उतरना है।''

खिड़की से बाहर की ओर देखते हुए हार्दिक ने माँ की बात सुनकर हाँ में सिर हिला दिया। माँ उसकी मनः स्थिति समझती थी, इसलिए पुनः बोली,

''देखो हार्दिक, अब हम दोनों पूना में अकेले तो नहीं रह सकते थे न.... रही बात आपके स्कूल और मित्रों की..... दादा जी ने चंडीगढ़ के बहुत अच्छे स्कूल में आपके दाखिले की बात कर ली है और अच्छे मित्र भी आपके बन ही जायेंगे।''

बारह वर्षीय हार्दिक माँ की बात चुपचाप सुन रहा था।

वह केवल दो वर्ष का था, जब उसके पिता कैप्टन वैभव शुक्ला कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे, तब से वह अपनी माँ के साथ पूना में नाना जी के पास ही रह रहा था। चंडीगढ़ से दादा-दादी साल भर में दो तीन बार उसे मिलने आ जाते थे किन्तु वह कभी भी चंडीगढ़ नहीं आया था। अब नाना जी की मृत्यु के बाद हार्दिक और उसके माता जी को दादा-दादी जी ने अपने पास रहने के लिए बुला लिया था, लेकिन हार्दिक को पूना शहर, अपना स्कूल और मित्र छोड़ते हुए अच्छा नहीं लग रहा था।

''चलो बेटा, ट्रेन रुक गई, दादा जी हमें लेने आये होंगे।'' - माँ ने हार्दिक को झकझोरते हुए कहा।

ट्रेन से उतरते ही हार्दिक ने दादा जी को विभिन्न मैडलों से सजी वर्दी में कई पुलिस कर्मियों के साथ देखा तो वह हैरान रह गया। उसे ये तो मालूम था कि दादा जी पुलिस विभाग में हैं, पर उनका इतना रौब-रुतबा है- ये अनुमान नहीं था, क्योंकि दादा जी पूना में तो हमेशा साधारण कपड़ों में एक आम आदमी की तरह ही आते थे।

वह दादा जी के चरण स्पर्श कर लिपटकर मिला। पुलिस कर्मियों ने उनका सामान उठाकर गाड़ी में रखा उनकी गाड़ी अब घर की ओर जा रही थी। रास्ते में चौराहों पर खड़े पुलिस वाले उनकी गाड़ी को देखकर सैल्यूट मारते तो वह यह देखकर अचरज से उछल-सा पड़ता।

घर पहुँचने पर वह दादी जी से बड़े प्यार से मिला। उसे पूरा घर देखने की बड़ी उत्सुकता थी। वह जल्दी से पूरा घर घूम आया और आकर माँ के कान में धीरे से बोला,

''माँ, दादा जी का घर तो बहुत बड़ा है, कितना बड़ा बगीचा है! गेट पर दो-दो पुलिस सुरक्षा कर्मी हैं और घर में नौकर-चाकर हैं।''

''बेटा, दादा जी पुलिस विभाग में एस.एस.पी. हैं। दादा जी ने दो दिन घर पर रहकर हार्दिक के साथ बिताए। हार्दिक अब खुश था।''

आज दादा जी सुबह-सुबह पुलिस वर्दी में तैयार थे। वे अपने ऑफिस जाने से पहले हार्दिक को साथ लेकर स्कूल में उसका दाखिला करवाने गए। प्रिंसिपल के ऑफिस में दादा जी के साथ जाते हुए हार्दिक अपनी पुलिस शान समझ रहा था। दादा जी उसका दाखिला करवाकर चले गए।

कक्षा में सभी लड़के उसे अपना मित्र बनाना चाहते थे लेकिन, पूना के संकोची, शर्मीले हार्दिक के मन में घमंड, अभिमान ने जगह ले ली थी। इसी प्रवृत्ति ने उसे किसी का मित्र नहीं बनने दिया।

उसे स्कूल में आए दो महीने हो गए थे। हालाँकि किसी अध्यापक को उसकी पढ़ाई से शिकायत नहीं थी, लेकिन कक्षा के सभी छात्र उससे तंग थे। उन सब पर हार्दिक का दबदबा था। कोई जल्दी-जल्दी उससे उलझता नहीं था। जो बच्चे उसका रौब मानते, वे तो हार्दिक की शरारतों से बचे हुए थे और जो ज़रा भी उसके सामने सिर उठाते वह उनका नुकसान कर देता। एक दिन उसने रियाज़ की घड़ी तोड़ दी..... तो उसी दिन पलाश की किताब फाड़ दी..... अनुराग के बैठने पर डैस्क खींच लिया और वह गिरते-गिरते बचा। हार्दिक के दादा जी का शहर में नाम होने के कारण कोई भी विद्यार्थी प्रिंसिपल या किसी अध्यापक को शिकायत नहीं करता था। यहाँ तक कि स्कूल की कैंटीन से भी हार्दिक दादा जी के नाम की आड़ में बिना पैसे दिए कुछ न कुछ खा लेता था।

आज जब वह स्कूल से घर पहुँचा तो माँ ने कहा, ''बेटा तैयार हो जाओ हमें दादा जी के साथ एक कार्यक्रम में जाना है।''

हार्दिक दादा जी, दादी जी व माँ के साथ एक स्कूल के बड़े से हॉल में पहुँचा। वहाँ कारगिल

के सैनिकों की स्मृति में दादा जी ने अपना रक्तदान करके रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया।

इसके पश्चात् वे दूसरे बड़े से हॉल में पहुँचे जहाँ बहुत से लोग, सैनिक, नेता व पुलिस अधिकारी उपस्थित थे। यहाँ हर वर्ष की तरह आज भी 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' मनाया जाने वाला था, जिसमें 1999 के कारगिल युद्ध में 'ऑप्रेशन विजय' के दौरान जिन 527 सैनिकों ने अपनी शहादत से जीत प्राप्त की थी, उन शहीदों को श्रद्धाँजलि देने और जीत को मनाने का कार्यक्रम था।

'सर हमारा रहे न रहे..... तेरा माथा चमकता रहे' शीर्षक से वहाँ कारगिल युद्ध के जाबाँजों की बहादुरी के कारनामों की तस्वीरें भी लगाई हुई थीं। उनमें से कुछ तस्वीरों को देखते हुए हार्दिक माँ से कहता है,

''माँ ..... ये तो पिता जी की .....''

''हाँ बेटा, ये आपके पिता जी की ही तस्वीरें हैं.....''

'माँ, हमें आज यहाँ क्यों बुलाया गया है ?''

''बेटा, इस शहर के शहीद कैप्टन वैभव शुक्ला यानि आपके पिता जी ने अपनी जान देकर कारगिल युद्ध में शत्रुओं के छक्के छुड़ा कर विजय प्राप्त की थी। ऐसे बहादुर बेटे के महान पिता जी यानि आपके दादा जी को सम्मानित करने के लिए हमें यहाँ बुलाया गया है। साथ ही इस स्कूल का नामकरण भी आपके पिता जी के नाम पर किया जा रहा है।''

उधर मंच पर कैप्टन वैभव शुक्ला के 'ऑप्रेशन विजय' के दौरान दिखाए गए अदम्य साहस, वीरता और पराक्रम के बारे में बताया जा रहा था। साथ ही दादा जी को सम्मानित करने के लिए मंच पर बुलाया जा रहा था। दादा जी के मंच पर पहुँचते ही मंच संचालक ने एस.एस.पी. दादा जी की ईमानदारी व मेहनत की प्रशंसा करनी शुरू कर दी - ''इन्होंने कभी किसी निरपराधी को सज़ा नहीं दी तो किसी अपराधी को कभी छोड़ा भी नहीं ..... न ही कभी इन्होंने रिश्वत ली है। इस शहर को गर्व है ऐसे पिता पर और ऐसे बेटे पर जिन्होंने अपना पूरा जीवन कर्त्तव्य-पथ पर लगा दिया।''

मंच संचालक की एक बात से तो हार्दिक के कान ही खड़े हो गए - ''अब भविष्य में इनके पोते हार्दिक शुक्ला से उम्मीद है कि वह अपने पिता जी और दादा जी के पदचिह्नों पर चलेगा और इस शहर और देश का नाम रोशन करेगा।''

यह सुनते ही हार्दिक के शरीर में सिहरन-सी पैदा हुई। उसकी आँखों से आँसू छलछला आए। वह दादी जी व माँ के साथ बैठा सोचने लगा--

''पिता जी ने अपनी बहादुरी से दादा जी का सिर ऊँचा किया है, लेकिन मैं स्कूल में दादा जी की आड़ लेकर कैसी बहादुरी दिखा रहा हूँ! इस सबसे तो दादा जी का सिर नीचा ही हो जाएगा।''

हार्दिक एक ओर अपने पिता के बलिदान और दूसरी ओर दादा जी की ईमानदारी के बीच स्वयं को तोल रहा था। वह इन दो आदर्शों में स्वयं को कहीं भी नहीं पा रहा था और खुद को बौना अनुभव कर रहा था। उसका हृदय ग्लानि और पश्चाताप से भर गया।

उसने वहीं बैठे-बैठे प्रण किया कि वह कल स्कूल जाकर कक्षा के सभी लड़कों से माफी माँगेगा और उन्हें अपना मित्र बनाएगा। अपनी पॉकेटमनी से कैंटीन वाले को कर्ज़ चुकाएगा। साथ ही पिता जी व दादा जी के आदर्शों पर चल कर जीवन में कुछ कर दिखलाएगा।

इसी दृढ़ निश्चय और विश्वास के साथ वह अगले दिन स्कूल जाने की प्रतीक्षा में था । आज सचमुच ही 'विजय दिवस' के अवसर पर हार्दिक ने अपने घमंड पर विजय प्राप्त कर ली थी।

अभ्यास

1. **नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-**

ਸ਼ਹੀਦ	=	शहीद	ਜਿੱਤ	=	जीत
ਸਾਲ	=	साल	ਤਸਵੀਰ	=	तस्वीर
ਪੁਲਿਸ	=	पुलिस	ਘੜੀ	=	घड़ी
ਵਰਦੀ	=	वर्दी	ਮਿੱਤਰ	=	मित्र

2. **नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखें:-**

ਅੰਦਾਜ਼ਾ	=	अनुमान	ਯਾਦ	=	स्मृति
ਦੁਬਾਰਾ	=	पुनः	ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ	=	कार्यक्रम
ਖ਼ੂਨਦਾਨ	=	रक्तदान	ਸਿਰਲੇਖ	=	शीर्षक

3. **इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-**

(क) हार्दिक अपनी माँ के साथ पूना से चंडीगढ़ क्यों जा रहा था?

(ख) हार्दिक को चंडीगढ़ जाना अच्छा क्यों नहीं लग रहा था?

(ग) ट्रेन से उतरते ही दादा जी को देखकर हार्दिक क्यों हैरान हो गया?

(घ) कक्षा के सभी विद्यार्थी हार्दिक से क्यों तंग रहते थे?

(ङ) विजय दिवस क्यों मनाया जाता है?

(च) स्कूल का नाम हार्दिक के पिता के नाम पर क्यों रखा गया?

(छ) हार्दिक ग्लानि और पश्चात्ताप से क्यों भर गया?

4. **इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-**

(क) हार्दिक के हृदय में एकाएक परिवर्तन कैसे हो गया? अपने शब्दों में लिखें।

(ख) 'विजय दिवस' पाठ के नाम की सार्थकता पर प्रकाश डालें।

5. **वाक्यों में प्रयोग करें :-**

घमंड _____ _____

रक्तदान _____ _____

उद्घाटन _____ _____

महान _____ _____

नामकरण _____ _____

अचरज _____ _____

गर्व _____ _____

पश्चात्ताप _____ _____

सम्मानित _____ _____

6. **इन मुहावरों के वाक्य बनायें :-**

छक्के छुड़ाना _____ _____

जान देना _____ _____

सिर ऊँचा करना _____ _____

कान खड़े होना _____ _____

नाम रोशन करना _____ _____

सिर उठाना _____ _____

दबदबा होना _____ _____

7. **विपरीत शब्द लिखें :-**

साधारण = _____

विश्वास = _____

मित्र = _____

जीवन = _____

विजय = _____

प्रशंसा = _____

अपराधी = _____

8. **पर्यायवाची शब्द लिखें :-**

युद्ध = _____, _____

कपड़ा = _____, _____

कान = _____, _____

बगीचा = _____, _____

दिन = _____, _____

घर = _____, _____

माँ = _____, _____

चरण = _____, _____

9. **भाववाचक संज्ञा बनायें :-**

वीर = _____ मित्र = _____

लड़का = _____ ऊँचा = _____

महान = _____ अच्छा = _____

10. शुद्ध करें :-

चढीगड़ = _____

युध = _____

सैलयूट = _____

आप्रेरशन = _____

प्रसंशा = _____

मालुम = _____

इमानदारी = _____

प्रन = _____

11. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें :-

देश के लिए प्राण न्यौछावर करना = _____

चार रास्तों का समूह = _____

जो अपराध न करे = _____

खून दान करना = _____

संकोच करने वाला = _____

मन की स्थिति = _____

पाठ 9

स्वराज्य की नींव

पात्र-परिचय

रानी :	झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
ताँत्या :	ताँत्या टोपे
जूही मोती बाई : झलकारी	स्त्री सैनिक व रानी की सहेलियाँ।
रघुनाथ : गुल मुहम्मद :	रानी के सैनिक सरदार

दृश्य : एक

(सन् 1857, अंग्रेज़ों की 'फूट डालो और राज करो' नीति सफल हो रही थी। झाँसी में भी वे अपना अधिकार जमाना चाहते थे। उन्होंने रानी के गोद लिए पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया था। रानी अपने सभासदों से विचार-विमर्श कर रही थी। जूही का प्रवेश)

जूही : महारानी की जय हो!

रानी : आओ जूही, क्या समाचार है ?

जूही : समाचार.... शुभ नहीं है।

रानी : एक गोरे, दूसरे स्वार्थी और गद्दार लोग.....ऐसे में शुभ समाचार की आशा करना ही व्यर्थ है....खैर कहो।

जूही : अंग्रेज़ों ने झाँसी को अपने अधिकार में लेने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

ताँत्या : अरे! अभी झाँसी शोक से नहीं उभरी और अंग्रेज़ों की यह चाल.....

रानी : उन्होंने शेरनी के मुँह में हाथ डालने की कोशिश की है.... उन्हें उनके अंजाम तक पहुँचाना होगा।

जूही : हाँ! सुना है कि आपको पाँच हज़ार रुपए पेंशन दी जाएगी।

रानी : हुँ....पेंशन.....मेरे देश, मेरे राज्य में विदेशी मुझे पेंशन देंगे.....मैं पेंशन न लूँगी, न ही अपनी झाँसी इन अंग्रेज़ ज़ालिमों को दूँगी।

रघुनाथ : महारानी धीरज से काम लें। एक तो अंग्रेज़ ताकत में हैं और दूसरे देशद्रोही उनके साथ हैं। ध्यान रहे मनुष्य के साहस और बुद्धि की परीक्षा विपरीत स्थिति में ही होती है।

रानी : तो क्या मैं उन फिरंगियों से हार मान लूँ?

ताँत्या : कदाचित नहीं.....स्वराज्य की ज्वाला को सुलगने दो, अवसर आने पर विस्फोट करेंगे। अभी उनकी शक्ति परखते हैं और गुप्त तैयारी करेंगे।

रानी : ठीक है जूही तुम और मोतीबाई गुप्तचर बन अंग्रेज़ सिपाहियों से जानकारी हासिल करो।

जूही : हमारे अहोभाग्य ! हम स्वराज्य के लिए सब कुछ कुर्बान कर देंगे।

रानी : शाबाश सखी! मुझे तुम से यही आशा थी। जाओ और दिखा दो भारतीय नारी शक्ति को!

(जूही का प्रस्थान)

दृश्य : दो

(स्थान : शहर में रानी का महल)

(मोतीबाई का प्रवेश)

मोतीबाई : महारानी की जय हो।

रानी : महारानी नहीं सखी; स्वराज्य संग्राम में हम सभी बराबर हैं। कहो, क्या समाचार है?

मोतीबाई : अंग्रेज़ प्रजा पर अत्याचार कर रहे हैं। प्रजा स्वराज्य चाहती है। वीर-वीराँगनाओं की भुजाएँ अंग्रेज़ों से युद्ध को फड़फड़ा रही हैं।

रानी : आह! मेरी प्रजा पर अत्याचार .....प्रजा ही हमारी शक्ति है, परन्तु .....

मोतीबाई : परन्तु क्या? महारानी हम रणचंडी बनना चाहती हैं।

रानी : समय आने दो सखी! प्रजा में जोश भरो, अंग्रेज़ सेना के हिन्दुस्तानी सिपाहियों को स्वराज्य के लिए प्रेरित करो। देखना, मैं स्वयं प्रजा के आगे स्वराज्य का परचम लहराऊँगी।

ताँत्या : हमें अपनी वीराँगनाओं पर गर्व है।

जूही : अरे ! दुर्गा अवतार हैं हम! दुष्टों पर जब छायेंगी, छठी का दूध याद करायेंगी।

रघुनाथ : धन्य है ! भारत भूमि की नारी। माता का शीतल आँचल, दुष्टों की संहारक भी।

गुल मुहम्मद : अरे! हर हर महादेव का डमरू बाजेगा अंग्रेज़, दुम दबाकर भागेगा.....गुलाम बनाएगा फिरंगी हमें, हुँह!

दृश्य : तीन

(मेरठ और दिल्ली में क्रान्ति हो गई। बहादुरशाह जफर सम्राट बन गए। विद्रोही सैनिक किले में प्रवेश कर गए। स्थान : रानी का महल (गुल का प्रवेश)

ताँत्या : आओ गुल, क्या समाचार है?

गुल : विद्रोही सैनिक किले में प्रवेश कर गए हैं। उन्होंने अंग्रेज़ सैनिकों पर धावा बोल दिया है। अंग्रेज़ अपने बाल-बच्चों के लिए पनाह माँग रहे हैं।

रानी : तो क्या आक्रमणकारी स्त्रियों और बच्चों पर भी हमला कर रहे हैं ?

गुल : जी महारानी।

रानी : यह तो बहुत बुरा हुआ ..... स्त्रियों-बच्चों को हमारे महल में पनाह दो, मैं देखती हूँ।

रघुनाथ : क्या .....दुश्मन के बच्चों को पनाह !

रानी : हमारा युद्ध अंग्रेज़ों से हैं, निरपराध बच्चों और स्त्रियों से नहीं। शरणागत की रक्षा हमारी संस्कृति है।

(भीषण युद्ध हुआ। अंग्रेज़ परास्त हो गए। रानी ने विद्रोहियों को शाँत कर लौटा दिया। परन्तु स्वार्थी गद्दारों ने अंग्रेज़ों से मिल पुनः हमला कर दिया।)

(रानी अपने महल में)

रानी : रघुनाथ जी स्थिति विकट हो गयी है।

रघु : जी महारानी, एक क्रान्ति असमय हो गई और आस्तीन के साँपों ने फन दिखाये हैं।

रानी : साँपों के फन कुचलने हैं। सेना तैयार करो।

रघुनाथ : हमारे जाँबाज तैयार हैं।

रानी : ध्यान रहे यदि मैं युद्ध में काम आऊँ तो अंग्रेज़ों के अपवित्र हाथ मेरी देह को छूने न पायें।

सभी सैनिक : हमारे जीते जी आपका बाल भी बाँका न होगा।

रघुनाथ : स्थिति ऐसी है, हमें कालपी प्रस्थान करना होगा।

रानी : हाँ, वहाँ राव साहब व लालकुर्ती सेना में बहादुर सिपाही हैं।

गुल मुहम्मद : पर क्या इस संग्राम में वे हमारा साथ देंगे ?

रानी : तुम भूलते हो गुल, स्वराज्य की बलिवेदी पर हिन्दू-मुसलमान सभी मर मिटने को तैयार हैं।

रघुनाथ : परन्तु किले से बाहर निकलना आसान नहीं।

झलकारी : अरे यह नाचीज़ किसलिए है ? मैं रानी का वेश बना अंग्रेज़ों को भटकाऊँगी और स्वराज्य के लिए भेंट चढ़ी तो धन्य हो जाऊँगी।

रानी : धन्य हो झलकारी.....ईश्वर रक्षा करे, मेरे दोनों हाथों में तलवार दो.....चलो सैनिको।

(गुप्त स्थान पर)

रानी : वीर सरदारो ! झलकारी व अन्य बहादुर शेर स्वराज्य के लिए शहीद हो गए। जब तक हमारी जान में जान है, स्वराज्य के लिए लड़ेंगे। हमारा एक-एक बहादुर सौ-सौ गोरों पर भारी पड़ रहा है। फिरंगी भयभीत हैं। हाँ, ध्यान रहे अंग्रेज़ मेरी देह न छूने पायें।

गुल : हाथ काट कर चील कौवों को खिला देंगे। हमारी महारानी पर नज़र भी डाली तो।

रानी : चलो आक्रमण करो (रानी रणचंडी बन जाती है। मुँह में लगाम दबाये दोनों हाथों से युद्ध करती है। सबकी तलवारें कहर बरसा रही हैं। तभी एक अंग्रेज़ रानी के संगीन घोंप देता है।)

रानी : (घाव की परवाह न करते हुए) शाबाश वीरो, शाबाश! विजय हमारी है, हमारे खून का एक-एक कतरा स्वराज्य की नींव का पत्थर होगा।

रघुनाथ : कुछ ही सैनिक शेष हैं, कोई गोरा बचने न पायें। तभी एक गोली रानी की जाँघ पर लगती है। रानी घोड़े से गिरने लगती है।

रानी : (गिरते-गिरते) रघु.....गोरे मेरी देह को.....

(गुल मुहम्मद और रघुनाथ भागकर रानी को सम्भालते हैं और जंगल की ओर भाग जाते हैं)

दृश्य : चार

स्थान : संन्यासी की कुटिया

संन्यासी : बेटा! कौन हो तुम?

सभी : हम सैनिक हैं, हमारी रानी घायल है।

संन्यासी (पास आकर) : मेरे अहो भाग्य ! साक्षात देवी के दर्शन ! इधर लिटाओ इन्हें।

(साधु रानी के मुँह में गंगाजल डालते हैं।)

रानी : (अर्द्ध चेतना में) बाबा जी प्रणाम!

संन्यासी : स्वराज्य की देवी को मेरा शत-शत नमन!

रानी : बाबा स्वराज्य कब मिलेगा, कैसे.....?

बाबा : बलिदान से। तुम्हारा बलिदान स्वराज्य की नींव का पत्थर है। इन वीर-वीरांगनाओं का रक्त इस नींव को पूरा करेगा जिस पर स्वराज्य की इमारत चमचमाएगी।

रानी : सच बाबा (फिर बुदबुदाते हुए) स्वराज्य की इमारत चमचमाएगी..... स्वराज्य का परचम लहराएगा (रानी अचेत हो जाती है।)

सभी सैनिक : आह ! अंधेरा..... घोर अंधेरा हो गया।

बाबा : नहीं-नहीं, प्रातः की किरण के साथ क्रान्ति रूपी सूर्य उदय होगा, स्वतंत्रता का प्रकाश लेकर....प्रकाश अनन्त है....प्रकाश अनंत है.....स्वराज्य चमचमाएगा .....चमचमाएगा।

(परदा गिरता है)

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिंदी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼	=	अंग्रेज़	ਝਾਂਸੀ	=	झाँसी
ਪੈਨਸ਼ਨ	=	पेंशन	ਸਨਿਆਸੀ	=	संन्यासी
ਜ਼ਾਲਮ	=	ज़ालिम	ਪਰਚਮ	=	परचम

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिंदी भाषा में शब्द दिये गये हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें:-

ਸਵਰਾਜ	=	स्वराज्य	ਲਾਟ	=	ज्वाला
ਨੀਂਹ	=	नींव	ਬਹਾਦਰ ਔਰਤਾਂ	=	वीरांगनाएँ
ਫ਼ਜ਼ੂਲ	=	व्यर्थ	ਬੇਕਸੂਰ	=	निरपराध

3. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) अंग्रेज़ों की नीति क्या थी?

(ख) जूही ने रानी को क्या समाचार सुनाया?

(ग) महारानी के सम्मुख कौन-सी दो मुख्य चुनौतियाँ थीं?

(घ) जूही और मोतीबाई क्या-क्या कहकर रानी का हौसला बढ़ाती हैं?

(ङ) रघुनाथ के पूछने पर कि क्या आप दुश्मन के बच्चों को पनाह देंगी तो रानी क्या उत्तर देती है?

(च) पाठ में आस्तीन के साँप किसे कहा गया है?

(छ) रानी ने अपने सैनिकों से क्या कहा ?

(ज) झलकारी स्वराज्य के लिए किस प्रकार समर्पण करना चाहती है ?

(झ) घायल होने पर रानी अपने सिपाहियों से क्या कहती है ?

(ञ) जब सिपाही रानी को संन्यासी की कुटिया में ले जाते हैं, तब संन्यासी ने क्या कहकर रानी को संबोधित किया ?

4. इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखें :-

(क) आप कैसे कह सकते हैं कि महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान स्वराज्य की नींव बना ?

(ख) हमें किस घटना से पता चलता है कि रानी एक वीराँगना होते हुए भी ममतामयी माँ थी ?

5. इन मुहावरों को अर्थ लिखते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

आस्तीन का साँप = _____

छठी का दूध याद आना = _____

बाल भी बाँका न होने देना = _____

6. नये शब्द बनायें :-

स्व + राज्य = स्वराज्य

गुप्त + चर = _____

देश + द्रोही = _____

आक्रमण + कारी = _____

अ + समय = _____

7. पर्यायवाची शब्द लिखें :-

तलवार = _____, _____ हाथ = _____, _____

रक्त = _____, _____ स्वतंत्रता = _____, _____

घोड़ा = _____, _____ शहीद = _____, _____

इमारत = _____, _____ पत्थर = _____, _____

प्रणाम = _____, _____

8. लिंग जानें :-

वीर = वीराँगना साधु = साध्वी

दास = दासी रानी = राजा

9. विपरीत शब्द लिखें :-

अचेत = _____ स्वतंत्रता = _____ अंधेरा = _____

प्रातः = _____ गुप्त = _____ युद्ध = _____

10. **इन वाक्यों में आए सर्वनाम शब्द को रेखाँकित करें तथा उसका भेद बतायें :-**

	वाक्य	भेद
(क)	उन्होंने शेरनी के मुँह में हाथ डालने की कोशिश की है।	**पुरुषवाचक सर्वनाम**
(ख)	मैं पेंशन नहीं लूँगी।	_____
(ग)	आपको पाँच हज़ार रुपये पेंशन दी जायेगी।	_____
(घ)	कोई भी बचने नहीं पाये।	_____
(ङ)	बेटा! कौन आया है ?	_____
(च)	यह रानी का महल है।	_____

11. (क) महारानी लक्ष्मीबाई की जीवनी पुस्तकालय से लेकर पढ़ें।

(ख) श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' पढ़ें और याद करें।

(ग) जिस प्रकार महारानी लक्ष्मीबाई ने देश के लिए बलिदान दिया। इसी प्रकार अन्य बलिदान होने वाले वीर-वीराँगनाओं की सूची बनाओ।

(घ) 'भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम' के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

(ङ) वीरों के बलिदान से हमें स्वतंत्रता मिली है। इस स्वतंत्रता की रक्षा करना हम सबका कर्त्तव्य है। आप अपने देश की क्या सेवा कर सकते हैं ? सोचिये और लिखिये।

पाठ 10

बढ़े चलो, बढ़े चलो

न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो ।।
रहे समक्ष हिम शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,
रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

घटा घिरी अटूट हो,
अधर पे कालकूट हो,
वही सुधा का घूँट हो,
जिये चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो।।

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपना फाग हो,